नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 365, नई दिल्ली, गुरुवार 05 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

02 मैनीक्योर और पेडिक्योर के फायदे : शहनाज़ हुसैन

06 राष्ट्रीय रक्षा अकादमी द्वारा देश सेवा की दिशा में पहला कदम

08 होला मोहल्ला के अवसर पर दूध का लंगर आयोजित

दिल्ली में जाम, प्रदूषण, दुर्घटना, और जनता को परेशानी उत्पन्न करने वाले मुख्य कारक और सरकारी विभागों की भूमिका

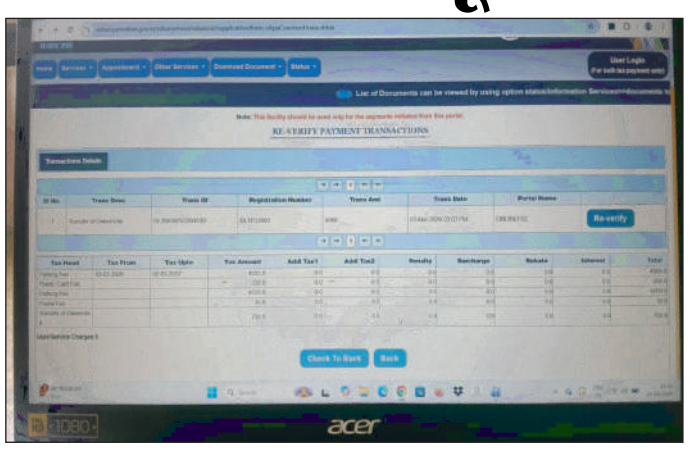

संजय कुमार बाठला

दिल्ली भारत देश की राजधानी पर दुनिया में आज प्रदूषण, सड़क दुर्घटनाओं, सड़को पर जाम और असुरक्षा की चरम सीमा पर गिना जाने वाला राज्य।

क्या कभी किसी ने इस बात का विश्लेषण करने का प्रयास किया की आखिर क्यों है भारत देश की राजधानी में यह सब चरम पर और क्या है कारण और सच्चाई में कौन है जिम्मेदार ?

माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत, भारत सरकार, दिल्ली उच्च न्यायालय, दिल्ली सरकार एवं अन्य सरकारी विभागों की माने तो दिल्ली की जनता है इसकी जिम्मेदार !

और यही कारण है जब इन पर रोक लगाने के लिए कोई भी इस पर विस्तृत कार्यवाही दिखाई जाती हैं तो जुर्माना, हर्जाना और सजा सिर्फ और सिर्फ जनता पर लगाए जाते हैं।

क्या सच में दिल्ली की जनता ही
दिल्ली के प्रदूषण
दिल्ली की सड़को पर जाम
दिल्ली की सड़को पर दुर्घटनाओं और
दिल्ली में फैलती असुरक्षा का कारक हैं ?

अगर यह बात सही है तो सख्त से सख्त नियम कानून आदेश जारी होने के बाद भी यह नियंत्रण में क्यों नही ?

विश्लेषण किया जाए तो कानूनी और गैर कानूनी दोनों ही तरह से
हर नियम,
हर कानून और
हर आदेश के जारी होने पर जनता को अरबों खरबों का जुर्माना लगा कर राजस्व और विभागीय कार्रवाई करने वालो की तिजोरी में पहुंच जाते है, जो सर्वविदित और सब की जानकारी में है।

फिर से वही सवाल उत्पन्न होता हैं की फिर इन सभी का कारक कौन ?

"परिवहन विशेष" द्वारा दिल्ली में करवाए गए सर्वे में जो तथ्य निकलकर सामने आए वह जनता की आंखे खोलने वाले हैं पर शायद दिल्ली की जनता अब सरकारों द्वारा मिलने वाली फ्री सेवाओं के चंगुल मे इतनी बुरी तरह फंस चुकी हैं की अपने साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ भी गूंगी बनी रहती हैं।

दिल्ली में नए वाहन पंजीकरण के समय वाहन पंजीकरण शुल्क के साथ ही सरकार आपसे
एक मुश्त पथ कर,
एक मुश्त पार्किंग शुल्क और
व्यवसायिक गतिविधियों में पंजीकृत वाहनों से प्रति वाहन जांच प्रमाण पत्र जारी करने के समय जांच शुल्क के साथ पार्किंग शुल्क वसूल करता है।

अब प्रश्न यह उठता है की

1. सड़को पर चलने और प्रयोग करने हेतु वाहन मालिकों ने वाहन की उम्र (समय सीमा) पूरी होने तक का एक मुश्त पथ कर और पार्किंग शुल्क जमा कर दिया तो

1. 1:- किस आधार पर दिल्ली नगर निगम दिल्ली की सड़को पर अवैध कब्जा करवा कर पार्किंग शुल्क के ठेके दे सकता है और जनता से पार्किंग शुल्क वसूल सकता है ?

1. 2:- किस आधार पर सड़को का प्रयोग पार्किंग के लिए उपयोग कर सड़को पर जाम लगवा सकता है ?

1. 3:- सड़को पर अवैध रूप से अपनी वसूली/ खजाने के नाम पर सड़को का दुरुपयोग कर जनता को परेशानी उत्पन्न कर सकता है ?

माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत, माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली द्वारा सड़को से अवैध पार्किंग हटवाने के दिशा निर्देश अवैध राजस्व की भूख रखने वाले विभाग पर लागू नहीं होते जो वह सड़को पर पार्किंग का ठेका देकर जनता से अवैध लूट और जनता को ही परेशानी उत्पन्न करने का प्रमुख जनक और कारक हैं ?

पार्किंग शुल्क के नाम पर हर साल अरबों रुपए आने के बाद भी पार्किंग स्थल उपलब्ध करके वहां पार्किंग करवाना इनका ध्येय या आवश्यकता नहीं जो माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत, दिल्ली उच्च न्यायालय अपने ही दिशा निर्देशों को दरकिनार होते स्पष्ट रूप में देखने के बाद भी इन के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रहे।

2. दिल्ली की सड़को पर अवैध कब्जा करवाने और सड़को पर जाम लगवाने वह भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत और उच्च न्यायालय दिल्ली के दिशा निर्देशों को दरकिनार करने वाला दूसरा प्रमुख विभाग है दिल्ली पुलिस और दिल्ली यातायात पुलिस।

दिल्ली की मुख्य सड़को पर, चौराहों पर, मोड पर और जहां कही भी बड़े या बड़ा शोरूम, बड़े या बड़ा मॉल, बड़े या बड़ा बैंकेट हाल, बड़ी मार्केट या दुकान इत्यादि उपलब्ध है वहां अगर दिल्ली नगर निगम की अवैध पार्किंग लुट नहीं है तो दिल्ली पुलिस और दिल्ली यातायात पुलिस की मेहरबानी खुले आम चलती सड़को पर अवैध पार्किंग करवाने में मददगार नज़र आ जाती हैं।

पार्किंग शुल्क जनता से वैध एवं अवैध रूप में वसूल कर दिल्ली नगर निगम का राजस्व इजाफा करवाने में सबसे मददगार विभाग है दिल्ली परिवहन विभाग,

उदाहरण के रूप मे आपको विभाग के पोर्टल के फोटो साझा कर रहे है जिसमें साफ नजर आ रहा है की वाहन का पार्किंग शुल्क 2027 तक जमा होने के बावजूद उसी समय का पार्किंग शुल्क फिर से वाहन मालिकों से जमा करने के लिए परिवहन विभाग वाहन मालिकों को मजबूर कर रहा है।

दिल्ली परिवहन विभाग दिल्ली में कभी भी वाहन प्रदूषण को खत्म नहीं होने देगा, उसका सबूत आपके पास, उपराज्यपाल और उच्च न्यायालय दिल्ली के पास भी है पर फिर भी रहते है चुप, क्यों वही जाने !

दिल्ली में ईवी पालिसी के तहत

1. घोषित सब्सिडी ईवी वाहन मालिकों को देने को तैयार नहीं उच्च न्यायालय के आदेश/ दिशा निर्देश के बाद भी

2. व्यावसायिक गतिविधियों में ईवी वाहनो का अधिक से अधिक उपयोग हो इसका लिए सड़क परिवहन एवम्राजमार्ग मंत्रालय द्वारा राजपत्रित अधिसूचना जारी है की ईवी वाहनों को व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल करने के लिए किसी प्रकार के मोटर वाहन नियम अधिनियम के तहत अनिवार्य परमिट से छूट है पर दिल्ली परिवहन विभाग वाहन निर्माता को स्टेट अप्रूवल और दिल्ली में वाहन बिक्री के लिए डीलर को ट्रेड सर्टिफिकेट जाती कर इजाजत दे रहा है पर ईवाहन को व्यावसायिक श्रेणी में अलग अलग बहाने बनाकर पंजीकृत नहीं कर रहा आज तक, और साथ ही जनता के पुराने समय सीमा पूरे हो चुके वाहनों को बलपूर्वक उठवाकर अपने उन प्रिय वाहन स्क्रैप डीलरो को स्क्रैप करने के लिए सौंप रहा है जिससे उम्मीद कम है की वाहन स्क्रैप होगा और स्क्रैप मूल्य प्राप्त होगा।

अब आप सभी सच्चाई समझ गए होंगे की दिल्ली परिवहन विभाग कैसे दिल्ली में निजी और व्यवसायिक श्रेणी में ई वाहनों को खुद ही आने से रुकवा रहा है।

दिल्ली परिवहन विभाग, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली यातायात पुलिस और दिल्ली पुलिस राजस्व इजाफा और निजी फायदों के लिए जिन्हें अवैध को हटाने का मुख्य कार्य नियमों के अंतर्गत सुपुर्द है अगर वही अवैध के जिम्मेदार हो तो कैसे कभी भी दिल्ली की सड़कें दुर्घटना मुक्त, जाम मुक्त हो सकती है और कैसे वायु गुणवत्ता बेहतर की उम्मीद दिल्ली में की जा सकती है, बड़ा सवाल ?

आम आदमी गलती से भी या जरूरत पर सड़क शुल्क, और पार्किंग शुल्क देने के बाद भी सड़क पर वाहन खड़ा कर दे तो

1. दिल्ली नगर निगम उठा कर ले जाती हैं

2. दिल्ली यातायात पुलिस उठाकर ले जाती हैं,

3. दिल्ली पुलिस भी अपने कब्जे में लावारिस बता कर उठा ले जाती हैं

"और जुर्माना और उठाने का शुल्क वसूलने के बाद ही छोड़ती हैं"

पर इन मुख्य विभागों जिनका मुख्य कार्य ही अवैध को हटवाना और सड़को को यातायात के प्रति खाली बनवाए रखना है द्वारा जो अवैध पार्किंग, अवैध ठेकेदार छोड़े गए हैं उनको शुल्क देने के बाद सब अवैध से वैध हो जाता है अब

1. माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत
2. माननीय उच्च न्यायालय
3. माननीय एनजीटी
4. वायु गुणवत्ता आयोग
5. उपराज्यपाल दिल्ली

कृप्या जनता को बताए की किस प्रकार आप दिल्ली की सड़को को

1. दुर्घटना मुक्त
2. जाम मुक्त
3. सुरक्षित और
4. दिल्ली की वायु गुणवत्ता सुधारने

का दावा कर जनता पर ही एक और आदेश जारी कर विश्वास दिलाना चाहते हैं ?

जब की

मुख्य कारकों और कारणों के स्वयं अवैध करने और करवाने में सीधे या अनजाने तौर पर मददगार बन रहे हैं।

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

दिल्ली की पुश्ता रोड पर हादसों के बाद एक्शन, भारी वाहनों पर रोक; चौड़ीकरण पर NGT करेगी फैसला

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली। सोनिया विहार पुश्ता रोड इन दिनों सड़क हादसों के चलते बदनाम हैं। पिछले एक माह में यहां भारी वाहनों की टक्कर से एक बच्ची समेत दो लोगों की जान जाने के साथ छह लोग घायल हो चुके हैं। लोगों में इसको लेकर गुस्सा है। इस गुस्से का सामना करते हुए दिल्ली पुलिस ने पुश्ता रोड पर भारी वाहनों का आवागमन बंद कर दिया है। लोग पुश्ता रोड को डबल करने के लिए पिछले कुछ दिनों से प्रदर्शन कर रहे हैं। दिल्ली सरकार के मंत्री और स्थानीय विधायक कपिल मिश्रा ने कहा कि पुश्ता रोड को डबल रोड करवाने के लिए वह भी प्रयासरत हैं। लेकिन इस पुश्ते के नजदीक यमुना है, जिस वजह से इसे डबल करने के काम में दिक्कत आ रही है।

दिल्ली सरकार पुश्ते पर छह किलोमीटर लंबा एलिवेटेड रोड बनाने के कार्य का शिलान्यास पिछले साल कर चुकी है। लेकिन यमुना की वजह से बहुत सारे विभागों से अनुमति लेनी है। सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग ने एलिवेटेड रोड का नक्शा बना लिया है। पुश्ते के डबल करने का प्रस्ताव यमुना को लेकर बनी स्टैंडिंग कमेटी के पास भेज दिया गया है। वहां से जो भी जवाब आएगा उसे एनजीटी के पास भेजा जाएगा। आखिर में एनजीटी की अनुमति सबसे महत्वपूर्ण है। एनजीटी जो निर्णय करेगा उसके बाद ही आगे का काम हो सकेगा। पुश्ता रोड पर जगह-जगह छोड़े व बड़े 250 पेड़ लगे हुए हैं। रोड के डबल होने में ये पेड़ बाधा बने हुए हैं। इसके लिए वन विभाग समेत कई विभागों से अनुमति ली जानी है। सिंचाई विभाग के अधिकारियों का कहना है कि एनजीटी की अनुमति मिलने के बाद वन विभाग में पेड़ों को हटाने के लिए आवेदन किया जाएगा। सोनिया विहार पुश्ता दिल्ली को उत्तर प्रदेश से जोड़ता है। एक आंकड़े के अनुसार यहां एक दिन में 50 हजार से अधिक वाहन गुजरते हैं। उत्तर प्रदेश के हिस्से में पुश्ता रोड के नजदीक औद्योगिक क्षेत्र है। पुश्ता रोड से ही भारी वाहनों का आवागमन होता है। जबकि एनजीटी ने पुश्ते पर भारी वाहनों के आवागमन को प्रतिबंधित किया हुआ है। आरोप है उसके बाद भी पुलिस की मिलीभगत से आवागमन होता है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html I
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार: QR कोड्स: सुविधा या साइबर जाल?

QR कोड घोटाले भारत में 2025 के शीर्ष 10 साइबर अपराध तरीकों में सूचीबद्ध किए गए हैं, फ़िशिंग और सिम स्वैप धोखाधड़ी के साथ। विश्लेषकों ने नोट किया कि छेड़छाड़ किए गए QR कोड्स का उपयोग तेजी से सार्वजनिक स्थानों, दुकानों और नकली डिलीवरी नोटिसों में किया जा रहा है ताकि नागरिकों को पैसे ट्रांसफर करने के लिए धोखा दिया जा सके।

दिल्ली, चांदनी चौक – दिसंबर 2025

दिल्ली पुलिस ने एक QR कोड छेड़छाड़ रैकेट का पर्दाफाश किया। राजस्थान के 19 वर्षीय युवक ने कपड़ों की दुकान के भुगतान बोर्ड पर नकली QR कोड चिपका दिए। जैसे ही ग्राहकों ने कोड स्कैन किया, पैसा सीधे उसके खाते में चला गया। आरोपी ने स्वीकार किया कि वह रजनीकांत की तमिल फ़िल्म "Vettaiyan" से प्रेरित था और UPI लेनदेन को मोड़कर भुगतान अपने खाते में करवा रहा था। लगभग ₹1.4 लाख का नुकसान रिपोर्ट किया गया।

QR कोड्स से साइबर अपराध कैसे हो सकता है

- अदृश्य गंतव्य: लिंक की तरह इन्हें पहले से नहीं देखा जा सकता, स्कैन करने पर ही पता चलता है।
- मैलवेयर डिलीवरी: खतरनाक ऐप या फ़ाइल डाउनलोड करवा सकते हैं।
- भुगतान धोखाधड़ी: असली QR कोड्स को बदलकर नकली कोड्स चिपकाए जाते हैं।
- डेटा चोरी: ईमेल या पोस्टर में दिए गए कोड्स से लॉगिन जानकारी और व्यक्तिगत डेटा चुराया जा सकता है।

सुरक्षा उपाय

- स्रोत की पुष्टि करें: केवल भरोसेमंद और आधिकारिक QR कोड्स स्कैन करें।
- आसपास देखें: असली कोड्स पर चिपके हुए स्टिकर से सावधान रहें।
- लिंक प्रीव्यू करें: ऐसे ऐप्स का उपयोग करें जो URL दिखाते हैं।
- ऑटो-डाउनलोड से बचें: QR कोड्स को ऐप/फ़ाइल स्वतः डाउनलोड न करने दें।
- डिवाइस अपडेट रखें: OS और सुरक्षा ऐप्स को अपडेट रखें।
- भुगतान क्रॉस-चेक करें: व्यापारी का नाम और विवरण जांचें।

नकली QR कोड पहचानने के तरीके

- संदिग्ध स्थान: दीवारों, फ्लायर्स या अनचाहे ईमेल में लगे कोड्स।
- संदर्भ का मेल न होना: लॉगिन/भुगतान मांगने वाले कोड्स जहाँ ज़रूरत नहीं।
- अजीब URLs: शॉर्ट या गलत स्पेलिंग वाले डोमेन।
- बहुत अच्छे ऑफ़र: मुफ़्त गिफ़्ट, इनाम या तात्कालिक कार्रवाई का लालच।

अगर आपने संदिग्ध QR कोड स्कैन कर लिया

- तुरंत रुकें—कोई व्यक्तिगत जानकारी दर्ज न करें।
- ब्राउज़र/ऐप बंद करें।
- ब्राउज़िंग हिस्ट्री साफ़ करें।
- सुरक्षा स्कैन चलाएँ।
- संबंधित संस्था या पुलिस को रिपोर्ट करें।

नकली QR कोड्स के खतरे

- फ़िशिंग हमले (लॉगिन जानकारी चोरी)
- फ़ोन में मैलवेयर इंस्टॉल होना
- वित्तीय धोखाधड़ी (नकली भुगतान पोर्टल)
- पहचान की चोरी (डेटा संग्रहण)

QR कोड स्कैन करने से पहले 5 बुनियादी सावधानियाँ

1. स्रोत की पुष्टि करें
केवल भरोसेमंद और आधिकारिक स्रोतों (बैंक, सरकारी पोर्टल, सत्यापित व्यापारी) के QR कोड ही स्कैन करें।

2. स्थान और स्थिति देखें
अगर QR कोड किसी पोस्टर या बोर्ड पर चिपका हुआ दिखे, या असली कोड पर स्टिकर चिपका हो, तो उसे स्कैन न करें।

3. लिंक प्रीव्यू करें
ऐसे ऐप या फ़ोन सेटिंग का उपयोग करें जो स्कैन करने से पहले URL दिखाए। अजीब या गलत स्पेलिंग वाले डोमेन से सावधान रहें।

4. ऑटो-डाउनलोड से बचें
QR कोड को ऐप या फ़ाइल स्वतः डाउनलोड करने की अनुमति न दें।

5. भुगतान विवरण मिलान करें
UPI या किसी भी QR भुगतान से पहले व्यापारी का नाम और अकाउंट विवरण ध्यान से जाँचें।

ये पाँच सरल कदम नागरिकों को नकली QR कोड घोटालों से बचा सकते हैं।

कमल में हैं अनेक बेहरतरीन गुण

कमल का परिचय आपने कमल का फूल जरूर देखा होगा और आपको यह भी पता होगा कि कमल का फूल कीचड़ में होता है।

लेकिन आप यह नहीं जानते होंगे कि कमल के फूल का उपयोग एक औषधि के रूप में भी किया जाता है। आमतौर पर कमल के फूल का प्रयोग पूजा-पाठ या घरों को सजाने के काम में ही किया जाता है, लेकिन सच यह है कि कमल के फूल का प्रयोग कई बीमारियों को ठीक कर सकता हैं।

कमल के प्रयोग से रक्तपित्त, अत्यधिक प्यास लगने की समस्या, जलन, पेशाब संबंधित बीमारी, कफज दोष, बवासीर जैसे रोगों में लाभ पाया जा सकता हैं।

आयुर्वेदिक ग्रंथों में कमल के फूल से संबंधित अनेक विशेषताएं बताई गई हैं। शायद आपको इनके बारे में जानकारी नहीं होगी। आइए जानते हैं कि जिस कमल के फूल को आप केवल पूजा-पाठ या सजावट के काम में लाते हैं, उससे रोगों को कैसे ठीक कर सकते हैं।

कमल क्या है कमल एक फूल है जो पानी में उत्पन्न होने वाली वनस्पति है। इसकी तीन प्रजातियाँ होती हैं -

1. कमल इसके पत्ते चौड़े होते हैं जो थाली की तरह पानी में तैरते हुए दिखाई देते हैं। इसके फूल अत्यन्त सुन्दर व बड़े होते हैं। रंग-भेद के अनुसार कमल कई प्रकार होते हैं।

2. कुमुद कुमुदनी का स्वरूप साधारणतया कमल के जैसा ही होता है; लेकिन इसके पत्ते कमल के पत्ते से छोटे, चमकीले, चिकने, जल की सतह पर तैरने वाले होते हैं। इसके फूल सफेद तथा 5 - 12 सेमी व्यास के होते हैं।

3. उत्पल (नीलकमल) इसके पत्ते पानी की सतह पर तैरने वाले तथा इसके फूल नीले रंग के होते हैं।

अनेक भाषाओं में कमल के नाम कमल का वानस्पतिक नाम Nelumbo nucifera Gaertn. (निलम्बो न्यूसीफेरा), Syn-Nelumbium speciosum Willd, Nelumbium nelumbo Druce है और यह Nymphaeaceae (निंफिएसी) कुल का है। कमल को देश या विदेश में अन्य इन नामों से भी जाना जाता है:-

हिंदी – कमल, English – लोटस (lotus), इण्डियन लोटस (Indian lotus), चाईनीज वाटर लिली (Chinese water lily), पिंक वाटर लिली (Pink water lily), Sacred lotus (सेक्रेड लोटस), संस्कृत में – पद्मम्, नलिनम्, अरविन्दम्, सरसिज, कुशेशयम्, तामरसम्, पुष्करम्, अम्भोरुहम्, पुण्डरीकम्, कोकनदम्, कमलम्, राजीवम्, उर्दू में– नीलोफर (Nilophar), उड़िया में – पदम (Padam), कन्नड़ में – बिलिया तावरे (Biliya tawre), गुजराती में – सूरीयाकमल (Suriyakamal), तेलुगु में – कलावा (Kalava), तम्मिपुव्वु (Tammipuvvu), कलुंग (Kalung), एरट्टामरा (Ertamara), तमिल में – तामरई (Tamrai), अम्बल (Ambal), बंगाली में – पद्म (Padam), कोमोल (Komol); नेपाली-कमल (Kamal), मराठी में – कमल (Kamal), पम्पोश (Pamposh); मलयालम-तमर (Tamara), अरबी में – निलोफर (Nilofar), उस्सुलनील्लोफर (Ussulnillofar), पर्शियन में – बेखनीलोफर (Bekhanilofar), नीलोफर (Nilofar)

कुमुद के नाम हिंदी में – कुमुद, कमोदनी, कोई, कुई, संस्कृत में – श्वेतकुवलय, कुमुद, कैरव, इंग्लिश में – यूरोपीयन वाटर लिली (European water lily), वाटर लिली (Water Lily), व्हाईट वाटरलिली (White waterlily), उर्दू में – गुले नीलोफर (Gule nilofar), कश्मीरी मे – ब्रीमपोश (Brimposh); गुजराती में - पोयणु (Poyanu), बंगाली में – शालुक (Shaluk), सुन्दी (Sundi), नेपाली में – सेतो कमल (Seto kamal)

मराठी में – कमोद (Kamod), पाण्डेरन-कमल (Pandheran-kamal), पर्शियन में – नीलोफर (Nilofar), अरेबिक में – अनर्बुल्म (Anarbulam), नीलोफर (Nilofar)

उत्पल (नीलकमल) के नाम हिंदी में – कफई, कँवल, कोक्का, नीलकमल, इंग्लिश में – ब्लू लोटस (Blue lotus), इण्डियन ब्लू वाटर लिली (Indian blue water Lily), संस्कृत में – उत्पल, असितोत्पल, कुवलय, नीलकमल, नीलपत्ते, नीलोत्पल, नीलपंकज, उत्पलक

उड़िया में – धाबालकेन (Dhabalken), राँगकेन (Wrongcane), सुबदीकेन (Subdicane); कन्नड़ में - बीलेनेडीले (Bilenedile), बंगाली में – नील-साप्ला (Neel-sapla), मराठी में – कृष्णकमल (Krishankamal), गुजराती में – पोयणु (Poyanu), कनवल (Kanval), नीलोफल (Nilophal), तेलुगु में – कटेलकलुवा (Katelkaluwa), नीटिथामरा (Nitithamara), अल्लिकदा (Allikada), नीटिकुलावा (Nitikulawa), तमिल में – वेल्लमपल (Vellampal), नीलोत्पलम (Nilotpalam), मलयालम में – सितम्बेल (Sitambel)

कमल के औषधीय गुण कमल के औषधीय प्रयोग, प्रयोग की मात्रा एवं विधियां निम्न हैं:-

1. सफेद बालों की समस्या में कमल के प्रयोग से लाभ:- उत्पल तथा दूध को मिला लें। इसे मिट्टी के बर्तन में 1 महीने तक जमीन में दबाकर रखें। इसे निकालकर बालों में लगाने से बाल स्वस्थ होते हैं तथा बालों का पकना कम होने लगता है।

2. रूसी हटाने के लिए करें कमल का उपयोग नीलकमल के केशर को तिल तथा आँवले के साथ पीस लें। इसमें मुलेठी मिलाकर सिर में लेप करने से रूसी खत्म होती है।

3. आधासीसी (अर्धावभेदक या अर्धकपारी) में कमल के उपयोग से फायदा अनन्तमूल, कूठ, मुलेठी, वच, पिप्पली और नीलकमल लें। इन 6 द्रव्यों को कांजी में पीसकर, थोड़ा एरण्ड तेल मिला लें। इसका लेप करने से आधासीसी या अधकपारी तथा सूर्य उगने के बाद होने वाले सिर के दर्द में लाभ मिलता है।

4. उल्टी रोकने के लिए करें कमल का प्रयोग कमल के भुने हुए छिलका रहित बीजों को 1-2 ग्राम की मात्रा में लें। इसमें मधु मिलाकर सेवन करने से उल्टी बंद हो जाती है।

5. सिर दर्द में कमल का उपयोग लाभदायक शतावरी, नीलकमल, दूब, काली तिल तथा पुनर्नवा लें। इन 5 द्रव्यों को जल में पीसकर लेप करने से सभी तरह के सिर दर्द में लाभ मिलता है।

6. गंजेपन की समस्या में कमल से फायदा बराबर भाग में नीलकमल, बहेड़ा फल मज्जा, तिल, अश्वगंधा, अर्ध-भाग प्रियंगु के फूल तथा सुपारी त्वचा को पीस लें। इसे सिर में लेप करने से गंजेपन की समस्या में लाभ होता है।

7. आंखों की बीमारी में कमल के फूल से लाभ कमल के फूल से दूध निकाल लें। इसे काजल की तरह आँखों में लगाने से आंखों के रोग ठीक होते हैं।

8. दांतों के रोग में कमल का इस्तेमाल लाभदायक कमल की जड़ को चबाने से दांतों के कीड़े खत्म होते हैं।

9. कमल से खांसी का इलाज 1-2 ग्राम कमल की बीज के चूर्ण में शहद मिलाकर सेवन करें। इससे पित्त दोष के कारण होने वाली खांसी ठीक हो जाती है।

10. गुदाभ्रंश में कमल का उपयोग लाभदायक कमल के 1-2 ग्राम पत्तों के चूर्ण में चीनी मिला लें। इसे खाने से गुदभ्रंश (गुदा का बाहर आना) में लाभ होता है।

* सुबह-सुबह 2 ग्राम कमल की जड़ के पेस्ट को गाय के घी के साथ मिलाकर सेवन करें। इससे गुदभ्रंश तथा इसकी वजह से होने वाले बुखार में लाभ मिलता है।

11. पेशाब में दर्द और जलन की समस्या को ठीक करता है कमल का उपयोग

12. कमल एवं नीलकमल से बने 10-20 मिली शीतकषाय (रात भर ठंडे पानी में रखने के बाद तैयार पदार्थ) या हिम में मधु एवं चीनी मिला लें। इसे पीने से पेशाब में दर्द और जलन की समस्या ठीक होती है।

13. तेल में पकाए हुए 2-4 ग्राम कमलकन्द को गाय के मूत्र के साथ सेवन करें। इससे पेशाब में दर्द की समस्या में लाभ होता है।

14. बुखार उतारने में कमल का उपयोग लाभदायक, कमल का काढ़ा बनाकर 10-20 मिली मात्रा में सेवन करने से बुखार में लाभ होता है।

* बराबर भाग में उत्पल, अनार फल की छाल तथा कमल केसर चूर्ण (1-2 ग्राम) लें। इसे तण्डुलोदक (चावल के धोवन) के साथ सेवन करने से बुखार के साथ होने वाली दस्त में तुरंत लाभ होता है।

15. पेचिश में कमल के प्रयोग से लाभ पित्तज दोष के कारण दस्त हो रही हो या पेचिश हो जाए तो बराबर भाग में कमल, नीलकमल, मंजिष्ठा तथा मोचरस लें। इन्हें 100 मिली बकरी के दूध में पका कर सेवन करें।

* 100 मिली बकरी के दूध में आधा भाग जल, 1-2 ग्राम सुंधबाला, 2-4 ग्राम नीलकमल, 1 ग्राम सोंठ का चूर्ण और 5-10 मिली पृश्निपर्णी रस मिला लें। इससे दस्त पर रोक लगती है।

* सफेद कमल केसर के पेस्ट में खाँड़, चीनी तथा मधु मिला लें। इसको चावल के धोवन के साथ सेवन करने से पेचिश ठीक होता है।

16. खूनी बवासीर में कमल का सेवन लाभदायक चीनी तथा कमल के केसर को मिलाकर मक्खन के साथ सेवन करने से खूनी बवासीर में लाभ होता है।

* 1-2 ग्राम कमल केशर में मिश्री मिलाकर खाने से योनि से रक्त निकलने की परेशानी और खूनी बवासीर में लाभ होता है।

17. गर्भपात रोकने में सहायता करता है कमल बराबर भाग में चीनी, कमल नाल तथा तिल के 2-4 ग्राम चूर्ण में मधु मिलाकर सेवन करने से गर्भपात की संभावना कम हो जाती है।

18. गर्भधारण करने में मदद करता है कमल कमल तथा कुमुद के 1-2 ग्राम पत्ते के पेस्ट में मधु एवं चीनी मिलाकर सेवन करने से गर्भपात नहीं होता है।

* कमल एवं नील कमल की जड़ से बने 1-2 ग्राम पेस्ट में 1 ग्राम मुलेठी चूर्ण, 2 ग्राम चीनी तथा 1 ग्राम तिल मिला लें। इसका सेवन करने से गर्भपात नहीं होता है।

* नीलकमल कन्द के 1-2 ग्राम चूर्ण में चीनी तथा मधु मिलाकर सेवन करने से गर्भपात के कारण होने वाला दर्द ठीक होता है।

* दूसरे महीने होने वाले गर्भपात को रोकने के लिए कमल नाल को नागकेसर के साथ मिलाकर दूध के साथ दिन में दो बार सेवन करना चाहिए।

19. योनि की बदबू आने की समस्या में कमल से लाभ कमल-नाल, कमलगट्टा तथा उशीर को तेल में पकाएं। इसे योनि पर लेप करने से योनि से आने वाली बदबू और योनि के ढीलेपन की समस्या में लाभ होता है।

20. कमल के इस्तेमाल से दाद का इलाज कमल की जड़ को पानी में पीसकर लेप करने से दाद, खुजली, कुष्ठ रोग और अन्य त्वचा रोगों में फायदा होता है।

21. वचा रोग में फायमेंद कमल का उपयोग कमल के पौधे के पत्ते तथा बरगद के पत्तों को जलाकर उनकी भस्म बना लें। इसे तेल में पका लें। इसे लगाने से त्वचा रोगों में लाभ होता है।

22. नाक-कान से खून बहने (रक्तपित्त) की समस्या में कमल से फायदा 65 मिग्रा कमल पंचांग भस्म को पानी में घोल लें। इसे छानकर जो क्षारोदक मिलता है उसमें मधु मिलाकर पीने से रक्तपित्त (नाक-कान से खून बहने की समस्या) में लाभ होता है।

* कमलनाल के 1-2 ग्राम चूर्ण में बराबर भाग में लाल चंदन चूर्ण तथा चीनी मिला लें। इसे चावल के धोवन के साथ सेवन करने से या कमलनाल से बने शीतकषाय (10-20 मिली), रस (5-10 मिली), पेस्ट (1-2 ग्राम) अथवा काढ़ा (20-30 मिली) का सेवन करने से रक्तपित्त (नाक-कान से खून बहने की समस्या) में लाभ होता है।

* कमल केशर के 1-2 ग्राम चूर्ण में मिश्री मिला लें। इसका सेवन करने से खून की उल्टी, थकान, सांसों के रोग, मुंह के सूखने की परेशानी, चक्कर आने की समस्या और अधिक प्यास लगने की समस्या ठीक होती है।

* कमल फूल का रस या काढ़ा को 1-2 बूंद नाक में डालने से नकसीर (नाक से खून बहने की समस्या) में लाभ होता है।

* बराबर भाग में नीलकमल, गैरिक, शंखभस्म तथा चंदन के पेस्ट में मिश्री युक्त जल मिला लें। इसे नाक में डालने से नाक से खून बहने के रोग (नकसीर) में लाभ होता है।

* बराबर भाग में खस, लालकमल तथा नीलकमल को जल में भिगो लें। इसे अच्छी तरह घोल लें। इस जल में चीनी तथा मधु मिलाकर सेवन करने से रक्तपित्त (नाक से खून बहने की बीमारी) जाता है।

* लाल कमल (इनका केसर), उत्पल, पृश्निपर्णी तथा प्रियंगु को जल में पका लें। इसका पीने से रक्तपित्त (नाक से खून बहने की बीमारी) में लाभ होता है।

23. शरीर की जलन में फायदेमंद कमल के गुण 1-2 ग्राम कमल केशर को पीस लें। इसमें मधु मिलाकर खाने से शरीर की जलन खत्म हो जाती है।

* सफेद कमल को पीसकर शरीर पर लेप करने से जलन से आराम मिलता है।

24. सांप के जहर को उतारने में मदद पहुंचाता है कमल 1-2 ग्राम कमल केशर को बराबर भाग में काली मिर्च के साथ पीस लें। इसे पिएं और सांप के काटे जाने वाले स्थान पर लगाएं। इससे सर्प के काटने से होने वाला दर्द, सूजन आदि में बहुत लाभ होता है।

कमल के उपयोगी भाग
पंचांग
फूल
फूल का केसर
जड़
बीज
फल

कमल के प्रयोग की मात्रा
1. कंद का रस – 10-20 मिलीॉ
2. बीज का चूर्ण 3-6 ग्राम।

कमल कहां पाया या उगाया जाता है यह भारत के सभी उष्ण प्रदेशों तथा हिमालय, कश्मीर, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र में पाया जाता है। इसके साथ ही कमल दक्षिणी भारत में तालाबों एवं पंकयुक्त स्थानों पर भी पाया जाता है।

स्वस्थ दांतो और स्वस्थ शरीर के लिए दातुन किस महीने में कौन सी करें

पिंकी कुंडू

महर्षि वागभट्ट के मत के अनुसार दांतों को मजबूती प्रदान करने वाले 9 से 10 प्रकार के दातुन पेड़ से आसानी से मिल जाते हैं।

करंज, नीम, बरगद, आम, जामुनी, बावल, खिजडो, खेर, आल, अशोक (आसोपालव), गुलर, आंवला, हरडे सभी पेड़ों के दातुन अच्छे काम के और फायदेमंद हैं।

1. जेठ महीने में आम के दातुन करने से शरीर में खांसी की समस्या कम होती है, बाल काले रहते हैं और साल भर सेहत बनी रहती है। आम के दातुन तभी करने चाहिए जब आम का असली सीजन शुरू हो।

2. नीम के दातुन होली के बाद करने चाहिए, यह दातुन गर्मियों में खासकर चैत्र वैशाख में करने चाहिए, नीम बहुत ही अच्छा है, गर्मी से छुटकारा दिलाती है। इसी कारण से नीम के दातुन गर्मी में ही करने चाहिए

3. बरगद के दातुन मानसून और गर्मियों में किए जा सकते हैं। बरगद के दातुन दांतों की पीढ़ी को मजबूत करते हैं। लत कमजोर दांतों को स्वस्थ बनाती है।

4. खेर के दातुन गर्मी में करने चाहिए जिससे गर्मी में चाँद निकल जाये,

5. बावल के दातुन (देशी बावल) किसी भी मौसम में इस्तेमाल कर सकते हैं लेकिन सर्दियों में ज्यादा काम आते हैं। देसी बावल के दातुन में सल्फर है जो इंसान को लत से मुक्ति के लिए बहुत उपयोगी है।

6. आंवला और जड़ी बूटी के दातुन किसी भी मौसम में कर सकते हैं, सुरक्षित हैं। आंवले के पेड़ के दातुन आठ दस दिन नियमित करने से दाँतों से मुंह की दुर्गन्ध दूर होती है और दांतों में प्योरिया नामक बीमारी ठीक होती है

7. गुलर, खिजडो खेर दातुन यह सभी सुरक्षित दातुन है। इसके करने से छेदी नहर के दांत, खराब होने बंद हो जाते हैं।

याद रखने योग्य बाते बेहतर है ताजे दातुन लाना लेकिन अगर ताजे दातुन ना मिले तो दातुन करने के बाद इस्तेमाल किये हुए दातुन के हिस्से को काट कर बाकी बचे हिस्से को पानी में रखें। यह दातुन बेहद उपयोगी और फायदेमंद हैं।

कोदो / कोदरी
(Kodo Millet – Paspalum scrobiculatum)

कोदो बाजरा, जिसे विभिन्न भाषाओं में कोदरी (गुजराती), वरगु (तमिल), अरिकलु (तेलुगु), कोदोन (हिंदी) आदि नामों से जाना जाता है, एक अत्यंत प्राचीन, कठोर और ग्लूटेन-मुक्त अनाज है। यह भारत तथा अफ्रीका के कुछ भागों में हजारों वर्षों से उगाया जाता रहा है।

सूखा-प्रवण क्षेत्रों में इसकी उत्कृष्ट सहनशीलता और उच्च पोषण घनत्व के कारण इसे "न्यूट्री-सीरियल" (पोषक अनाज) कहा जाता है।

यह अनाज विशेष रूप से अपने उच्च आहार रेशा (फाइबर), मध्यम प्रोटीन, कम वसा, तथा प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले जैव-सक्रिय यौगिकों—जैसे फिनोलिक अम्ल (फेरुलिक, कैफिक) और फ्लेवोनॉयड (टैक्सिफोलिन)—के लिए प्रसिद्ध है।

आधुनिक पोषण विश्लेषण, प्रयोगशाला एवं पशु-अध्ययन तथा आयुर्वेदिक परंपराओं में इसके स्वास्थ्य लाभों की पुष्टि मिलती है।

पोषण प्रोफ़ाइल (प्रति 100 ग्राम कच्चा अनाज – अनुमानित)

ऊर्जा: 346–353 कैलोरी

कार्बोहाइड्रेट: 59–66.6 ग्राम

प्रोटीन: 8.3–11 ग्राम (लाइसिन, थ्रेओनिन जैसे आवश्यक अमीनो अम्ल सहित)

आहार रेशा (फाइबर): 9–10.2 ग्राम (घुलनशील एवं अघुलनशील दोनों)

वसा: 1.4–4.2 ग्राम (मुख्यतः लिनोलिक व ओलिक जैसे असंतृप्त वसा अम्ल)

मुख्य सूक्ष्म पोषक तत्व:

विटामिन B समूह (नायसिन ₹2 mg, राइबोफ्लेविन, थायमिन), कैल्शियम (₹27 mg), फॉस्फोरस (₹188 mg), आयरन (0.5–2+ mg), मैग्नीशियम, पोटैशियम, जिंक।

विशेषताएँ:

प्राकृतिक रूप से ग्लूटेन-मुक्त

कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स (GI)

एंटीऑक्सीडेंट एवं पॉलीफेनोल से भरपूर

चावल व गेहूँ की तुलना में अधिक फाइबर और कुछ एंटीऑक्सीडेंट

प्रमुख स्वास्थ्य लाभ

1. पाचन एवं आंतों के स्वास्थ्य के लिए उत्कृष्ट

उच्च फाइबर कब्ज को रोकता है, मल त्याग को नियमित करता है और आंतों में लाभकारी बैक्टीरिया को पोषण देता है।

यह पेट फूलना कम कर पाचन को सहज बनाता है।

2. मधुमेह एवं रक्त शर्करा नियंत्रण में सहायक

कम GI, फाइबर और पॉलीफेनोल कार्बोहाइड्रेट के पाचन को धीमा करते हैं।

इससे भोजन के बाद रक्त शर्करा में अचानक वृद्धि नहीं होती और इंसुलिन संवेदनशीलता बेहतर होती है।

टाइप-2 मधुमेह प्रबंधन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त।

3. हृदय स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाता है

घुलनशील फाइबर LDL ("खराब") कोलेस्ट्रॉल कम करने में सहायक

मैग्नीशियम व पोटैशियम रक्तचाप नियंत्रित करते हैं

एंटीऑक्सीडेंट धमनियों को ऑक्सीडेटिव क्षति से बचाते हैं

विशेष रूप से रजोनिवृत्ति के बाद की महिलाओं के लिए लाभकारी माना जाता है।

4. वजन नियंत्रण में सहायक

उच्च फाइबर व प्रोटीन लंबे समय तक तृप्ति (पेट भरा रहने का एहसास) देते हैं, जिससे कुल कैलोरी सेवन कम हो सकता है।

रिफाइंड अनाज की जगह इसे लेने से वजन प्रबंधन में सहायता मिलती है।

5. शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट एवं सूजन-रोधी गुण

फिनोलिक यौगिक मुक्त कणों को निष्क्रिय करते हैं, सूजन कम करते हैं और दीर्घकालिक रोगों (जैसे कोलन या स्तन कैंसर के जोखिम) को घटाने में संभावित सहायक हो सकते हैं।

6. एनीमिया की रोकथाम एवं पोषण सुदृढ़ीकरण

आयरन हीमोग्लोबिन निर्माण में सहायक

B-विटामिन ऊर्जा व तंत्रिका तंत्र के लिए आवश्यक

जिंक, मैग्नीशियम हड्डियों व प्रतिरक्षा को मजबूत करते हैं

पारंपरिक एवं आयुर्वेदिक दृष्टिकोण

आयुर्वेद में इसे "लघु" (हल्का पचने वाला) माना गया है।

संयुक्त दर्द, अनियमित मासिक धर्म, थकान तथा घाव भरने में सहायक बताया गया है।

इसके लेसिथिन तत्व को तंत्रिका तंत्र एवं त्वचा स्वास्थ्य से भी जोड़ा जाता है।

आहार में शामिल करने के तरीके और तैयारी सुझाव

2–6 घंटे भिगोकर रखें (या अंकुरित/फर्मेंट करें)

इससे फाइटेट जैसे एंटी-न्यूट्रिएंट कम होते हैं और खनिज अवशोषण बढ़ता है।

पकाने की विधि

1 कप कोदो : 2–3 कप पानी

उबाल आने के बाद 10–15 मिनट धीमी आंच पर पकाएँ।

उपयोग के विचार

खिचड़ी
उपमा
पुलाव
डोसा/इडली (उड़द दाल के साथ)
रोटी (अन्य आटे के साथ मिलाकर)
दलिया या सलाद
मीठे व नमकीन दोनों व्यंजनों में उपयुक्त।

सावधानियाँ

फंगल संक्रमण का जोखिम यदि अनाज ठीक से संग्रहित न हो तो Aspergillus फफूंदी से दूषित हो सकता है, जो "कोदो विषाक्तता" का कारण बन सकता है। हमेशा विश्वसनीय स्रोत से खरीदें और सूखी, ठंडी जगह पर रखें।

एंटी-न्यूट्रिएंट प्रभाव अत्यधिक सेवन थायरॉयड या खनिज अवशोषण को प्रभावित कर सकता है। भिगोना/पकाना आवश्यक है।

दवाओं के साथ सावधानी यदि आप मधुमेह या कोलेस्ट्रॉल की दवाएँ लेते हैं, तो रक्त शर्करा की निगरानी करें और चिकित्सक से परामर्श लें।

सामान्य सलाह

प्रतिदिन 1–2 सर्विंग संतुलित आहार के हिस्से के रूप में लें।

यह कोई "चमत्कारी भोजन" नहीं है, परंतु संतुलित जीवनशैली के साथ यह अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष

कोदो बाजरा एक टिकाऊ, किफायती और अत्यंत पौष्टिक प्राचीन अनाज है, जो आधुनिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं और भारतीय पारंपरिक आहार दोनों के अनुरूप है।

विशेषकर रक्त शर्करा नियंत्रण, पाचन स्वास्थ्य और हृदय सुरक्षा के लिए यह उत्कृष्ट विकल्प है।

यदि आपको मधुमेह, थायरॉयड या अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ हैं, तो व्यक्तिगत सलाह हेतु चिकित्सक या आहार विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य करें।

"माला, जाप और कर्मकांड"

पिंकी कुंडू

हर व्यक्ति की जिज्ञासा रहता है की क्या माला, जाप और कर्मकांड मनुष्य को सत्य तक ले जाते हैं? क्या यह आवश्यक हैं?" इसका मेरे अनुसार जवाब है बिल्कुल भी नहीं

मेरा स्पष्ट मानना है कि आध्यात्मिक विकास किसी विशेष वस्त्र पहन लेने से नहीं होता।

न केसरिया से,
न सफ़ेद से,
न जटाओं से,
न माला से।

यदि अध्यात्म का संबंध वेश, श्रृंगार या बाहरी पहचान से होता, तो दुनिया में

वे सभी लोग जागृत हो जाते, जो धार्मिक वेशभूषा को धारण कर लेते हैं।

वास्तविकता इससे बिल्कुल उलट है। क्योंकि अध्यात्म दिखने की प्रक्रिया नहीं है, वह होने की प्रक्रिया है और "होना" मन के भीतर घटता है, शरीर के ऊपर नहीं।

लोग अक्सर कहते हैं - "हम तो सब कर रहे हैं, फिर भी कुछ घटित नहीं हो रहा।"

क्यों नहीं हो रहा? क्योंकि वे क्रियाएँ तो कर रहे हैं, पर मन वही का वही है।

वही भय,
वही अपेक्षाएँ,
वही धारणाएँ,
वही उधार का ज्ञान।

मन बदला नहीं, केवल दिनचर्या बदल गई और अध्यात्म दिनचर्या से नहीं, चेतना से जन्म

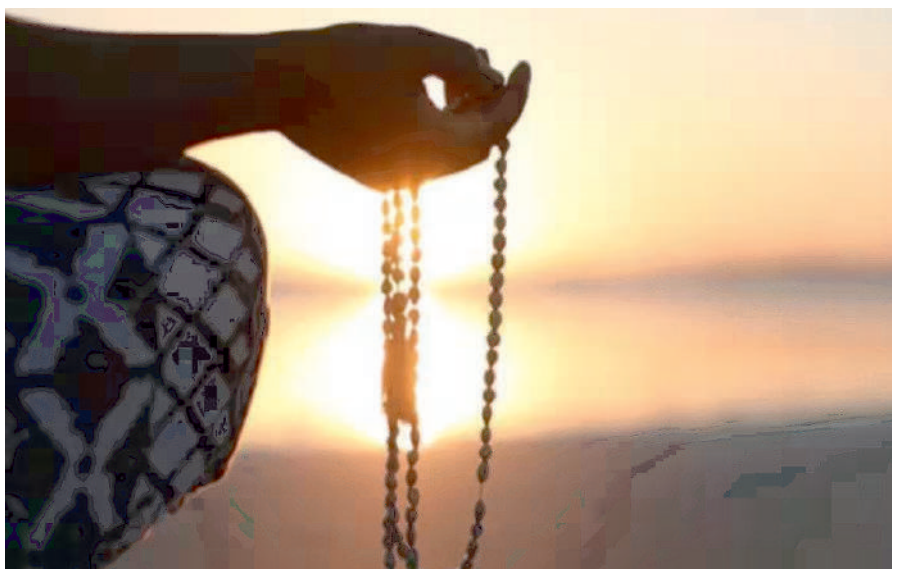

लेता है।

आधुनिक मनोविज्ञान कहता है - जब मन लगातार किसी पहचान, विधि या परिणाम से जुड़ा रहता है, तो वह बचने का उपाय में काम करता है। इस अवस्था में मस्तिष्क सत्य नहीं देखता, केवल सुरक्षा और स्वीकृति ढूंढता है।

यही कारण है कि अत्यधिक धार्मिक दिनचर्या के बावजूद अंदर कोई परिवर्तन नहीं होता।

इसके विपरीत, जब मन डर और अपेक्षा से मुक्त होता है, तो मस्तिष्क की तरंगें

सुसंगत हो जाती हैं - यानी बिखरी हुई नहीं, एक दिशा में बहती हुई और यही अवस्था आध्यात्मिक बोध की वैज्ञानिक भूमि है। इसलिए अध्यात्म भावनात्मक उछाल नहीं, मानसिक स्पष्टता की परिणति है।

हमारा मस्तिष्क अध्यात्म का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। परंतु उतना ही उपेक्षित भी मन केवल सोचने का कार्य नहीं करता। वह -

सूचनाओं का संग्रह करता है
विश्लेषण करता है
अनुभव करता है
तरंगें उत्पन्न करता है और
तरंगों को ग्रहण भी करता है

जब तक मन खंडित है, भरा हुआ है, उलझा हुआ है तब तक सत्य उसके लिए केवल एक विचार बना रहता है, अनुभव नहीं।

हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि ₹अध्यात्म₹, कुछ जोड़ने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि बहुत कुछ हटाने की प्रक्रिया है।

अन्दर के डर को हटाना।
दिखावे की ज़रूरत हटाना।
"मैं सही हूँ" की ज़िद हटाना।
और सबसे जरूरी -

उधार के ज्ञान और विश्वास को हटाना।

जब मन इन सब से मुक्त होता है, तभी वह

एकाग्र हो पाता है और एकाग्र मन ही वह भूमि है जहाँ सत्य अंकुरित होता है।

इसलिए मैं यह कहती हूँ - अध्यात्म कोई वेश नहीं, कोई पहचान नहीं, कोई अनुकरण नहीं, यह मन की क्रियाशीलता का विज्ञान है।

जब मन मुक्त होता है, तो सत्य को बुलाना नहीं पड़ता - वह स्वयं प्रकट हो जाता है।

तंत्र प्रभाव के मुख्य संकेत और समाधान

पिंकी कुंडू

तंत्र से पीड़ित व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसे लक्षण दिखते हैं जिन्हें पहचानना बहुत जरूरी है। अचानक शारीरिक कष्ट - बिना किसी कारण के शरीर के किसी भाग में तेज दर्द, सुई चुभने जैसा एहसास, जलन, झुनझुनी। बार-बार बीमार पड़ना - कोई न कोई बीमारी बनी रहती है, एक ठीक होती है तो दूसरी शुरू हो जाती है। नींद न आना - रात में नींद नहीं आती, बुरे सपने आते हैं, नींद में डर लगता है। घर में अशांति - परिवार के सदस्यों में बिना कारण झगड़े होते हैं, क्लेश बना रहता है। आर्थिक हानि - व्यापार में नुकसान, नौकरी में परेशानी, पैसा आकर खर्च हो जाता है। संतान सुख में बाधा - संतान नहीं होती या होती है तो उसके जीवन में परेशानियाँ बनी रहती हैं। मन में भय - बिना कारण डर, घबराहट, बेचैनी बनी रहती है। अजीब सी गंध - कभी-कभी आसपास अजीब सी गंध आती है जो किसी और को नहीं आती। यदि आपके जीवन में ऐसे लक्षण हैं, तो समझ लीजिए कि आप किसी न किसी रूप में तांत्रिक प्रभाव से पीड़ित हो सकते हैं।

समाधान - कुलदेवी और गणपति की शरण ऐसी स्थिति में सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है - अपनी कुलदेवी की शरण में जाना। कुलदेवी ही वह शक्ति हैं जो अपने वंश की रक्षा करती हैं। वे ही बाहरी शक्तियों से अपने भक्तों की रक्षा कर सकती हैं। इसके साथ ही, गणेश जी विघ्नहर्ता हैं। वे हर विघ्न को दूर करते हैं। तंत्र-मंत्र के प्रभाव को खत्म करने में गणपति की उपासना सबसे शक्तिशाली मानी जाती है। इसलिए मैं आपको दो चीजें करने का सुझाव देता हूँ।

पहला उपाय - कुलदेवी स्तोत्र का नित्य 3 बार पाठ आपको प्रतिदिन कुलदेवी स्तोत्र का 3 बार पाठ करना है। यदि आपको अपनी कुलदेवी का नाम पता है तो उनके नाम से पाठ करें। यदि नहीं पता तो बस इतना बोलें - ₹हे कुलदेवी! मुझे आपका नाम नहीं पता, लेकिन आप मेरी कुलदेवी हैं। मैं आपकी शरण में हूँ। मुझे इस तंत्र प्रभाव से मुक्ति दिलाएँ।₹ कुलदेवी स्तोत्र के रूप में आप कोई भी देवी स्तोत्र पढ़ सकते हैं - दुर्गा सप्तशती, चंडी पाठ, या फिर कोई सरल देवी स्तोत्र। विधि यह है कि सुबह स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें, लाल या पीले आसन पर बैठें, कुलदेवी का ध्यान करें, 3 बार कुलदेवी स्तोत्र का पाठ करें और लाल फूल, लाल चंदन, लाल मिठाई चढ़ाएँ।

दूसरा उपाय - गणेश माला मंत्र की शरण इसके साथ ही आपको गणेश माला मंत्र की शरण लेनी है। गणेश माला मंत्र बहुत शक्तिशाली है - यह हर विघ्न को दूर करने वाला है। तंत्र-मंत्र के प्रभाव को खत्म करने में यह मंत्र अत्यंत प्रभावी है। इसकी पूरी विधि और गणेश माला मंत्र का विस्तार से वर्णन मैं अगली पोस्ट में दूंगा। इसलिए अगली पोसट जरूर देखें।

यह भी करें - पूर्ण सुरक्षा के लिए इन दोनों उपायों के साथ कुछ और बातों का ध्यान रखें।

नियमितता - इन उपायों को रोज करें, बीच में न छोड़ें।

संकल्प - पहले दिन संकल्प लें कि मैं यह साधना 21 दिन करूंगा/करूंगी। भोजन - सात्विक भोजन करें, तामसिक चीजों से दूर रहें।

दान - गरीबों को भोजन दान करें, लड़कियों को भोजन कराएँ।

नियम - ब्रह्मचर्य का पालन करें, क्रोध से दूर रहें। विश्वास - पूरा विश्वास रखें कि आपकी कुलदेवी और गणेश जी आपकी रक्षा करेंगे।

एक सच्ची कहानी कुछ साल पहले एक सज्जन मिले बहुत परेशान थे। बताने लगे कि उन्हें 10 साल से अजीब सी बीमारी है। रात में नींद नहीं आती, शरीर में सुई चुभने जैसा दर्द होता है, खासकर पेट में। तमाम डॉक्टरों को दिखाया, सैकड़ों जाँचें करवाईं, लाखों रुपए खर्च कर दिए, लेकिन कोई आराम नहीं मिला।

उन्हें मैने कुलदेवी स्तोत्र और गणेश माला मंत्र का उपाय सुझाया। उन्होंने 21 दिन यह साधना की। 21 दिन बाद वह फिर मिले। इस बार उनके चेहरे पर शांति थी। बताने लगे कि 21 दिनों में उनका दर्द 80% कम हो गया है। नींद अच्छी आने लगी है। घर का माहौल भी सुधर गया है। उन्होंने यह साधना जारी रखी और आज पूरी तरह स्वस्थ हैं।

कैसे काम करता है यह उपाय यह उपाय कोई जादू नहीं है। इसके पीछे विज्ञान है।

कुलदेवी - आपकी कुलदेवी आपके वंश की रक्षक हैं। उनसे जुड़ने पर वह आपकी रक्षा करती हैं।

गणेश मंत्र - गणेश जी के मंत्र की ध्वनि कंपन ऐसे होते हैं जो नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करते हैं।

नियमितता - 21 दिन नियमित रूप से करने से यह आपके अवचेतन में बैठ जाता है और आपके चारों ओर सुरक्षा कवच बना देता है।

विश्वास - जब आप पूरे विश्वास से कोई काम करते हैं, तो आपके मन की शक्ति कई गुना बढ़ जाती है।

क्या तंत्र से मुक्ति संभव है? बिल्कुल संभव है। तंत्र की शक्ति कोई अजेय नहीं है। सच्चे मन से की गई साधना, अपने इष्ट देव की उपासना और कुलदेवी की कृपा से हर तंत्र प्रभाव खत्म किया जा सकता है। लेकिन ध्यान रखने वाली बात यह है कि यह कोई एक दिन का काम नहीं है। जिस तंत्र को करने में सालों लगे, उसे खत्म करने में भी समय लग सकता है। लेकिन अगर आप लगातार प्रयास करें, तो निश्चित ही सफलता मिलेगी।

संक्षेप में - अभी क्या करें

1. कुलदेवी स्तोत्र - रोज 3 बार पाठ करें।
2. गणेश माला मंत्र की शरण लें
3. 21 दिन - कम से कम 21 दिन यह साधना करें।
4. नियम - सात्विक भोजन, ब्रह्मचर्य, शांति बनाए रखें।
5. विश्वास - पूरा विश्वास रखें कि आपकी कुलदेवी और गणेश जी आपकी रक्षा करेंगे।

अंतिम बात तंत्र का प्रभाव कोई मामूली बात नहीं है। यह व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों स्तरों पर असर डालता है। लेकिन घबराने की जरूरत नहीं है। सनातन धर्म में हर समस्या का समाधान है। आपकी कुलदेवी आपकी सबसे बड़ी रक्षक हैं। वे आपके वंश की जननी हैं। उनकी शरण में जाइए। उन्हें पुकारिए। वे जरूर सुनेंगी। गणेश जी विघ्नहर्ता हैं। उनका मंत्र हर विघ्न को दूर करता है। उनकी शरण में जाइए। वे जरूर रक्षा करेंगे।

ॐ कुलदेव्यै नमः। ॐ गं गणपतये नमः

नागा साधु हिंदू धर्म के तपस्वी योद्धा

पिंकी कुंडू

नागा साधु हिंदू धर्म के तपस्वी योद्धा होते हैं जो आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) की तलाश में सांसारिक जीवन छोड़ देते हैं। मुख्य रूप से जूना अखाड़े जैसे अलग-अलग अखाड़ों से जुड़े होने के कारण, वे सबसे ज़्यादा कुंभ मेले से जुड़े होते हैं, जहाँ वे बड़े जुलूस निकालते हैं और पवित्र नदियों में पहला औपचारिक स्नान करते हैं। नागा साधु अपने शरीर पर राख (भौतिक दुनिया से अलगाव का प्रतीक) लगाने, रुद्राक्ष की माला पहनने और अक्सर भगवान शिव की भक्ति के प्रतीक के रूप में त्रिशूल रखने के लिए जाने जाते हैं। पारंपरिक रूप से धर्म की रक्षा के लिए आध्यात्मिक साधना और मार्शल आर्ट दोनों में प्रशिक्षित, वे ब्रह्मचर्य, ध्यान और तपस्या के सख्त नियमों का पालन करते हैं। उनका निडर रूप और त्याग के प्रति गहरा समर्पण सदियों पुरानी परंपरा को दिखाता है जो हिंदू संस्कृति में रहस्यवाद, भक्ति और तपस्वी शक्ति को मिलाता है।

सप्तपदी (सात वचन/फेरे)

पिंकी कुंडू

प्रथम चरण (भोजन): जीवनयापन और अन्न की पूर्ति के लिए।

द्वितीय चरण (शक्ति): शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति व स्वास्थ्य के लिए।

तृतीय चरण (समृद्धि): धन, संपत्ति और समृद्धि की वृद्धि के लिए।

चतुर्थ चरण (सुख/ज्ञान): परिवार में ज्ञान, सुख और प्रेम के लिए।

पंचम चरण (संतान/पशुधन): संतान, परिवार के पालन-पोषण और पशुधन के लिए।

षष्ठ चरण (ऋतु/सुख): हर परिस्थिति और ऋतु में साथ निभाने के लिए।

सप्तम चरण (मित्रता): जन्म-जन्मांतर तक अटूट मित्रता, वफादारी और प्रेम के लिए।

त्रिनेत्र : भगवान शिव के तीन नेत्र

पिंकी कुंडू

भूत,
वर्तमान,
भविष्य

का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें मुख्य रूप से ज्ञान, इच्छा और क्रिया शक्ति के रूप में जाना जाता है।

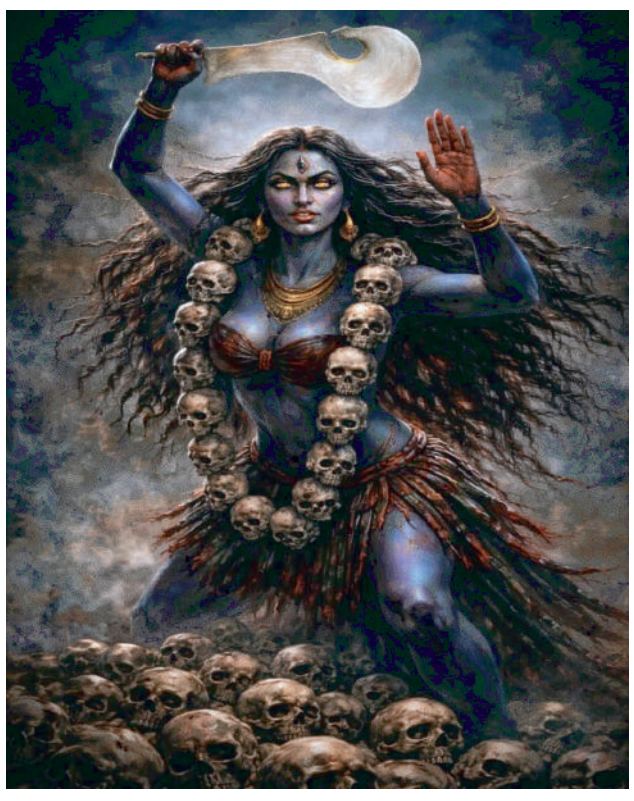

माँ काली का खोपड़ी से जुड़ाव गहरा आध्यात्मिक

पिंकी कुंडू

माँ काली का खोपड़ी से जुड़ाव गहरा आध्यात्मिक प्रतीक है, जो नश्वरता, अहंकार के खत्म होने और शरीर की पहचान से परे होने में निहित है। खोपड़ी, जिसे अक्सर उनकी माला में देखा जाता है या खप्पर की तरह पकड़ा जाता है, घमंड, भ्रम और कुछ समय के लिए खुद से लगाव के अंत को दिखाता है। डरावने अर्थ में मौत का प्रतीक होने के बजाय, यह झूठी पहचान से आज़ादी और हमेशा रहने वाले सच के प्रति जागने को दिखाता है। हर खोपड़ी साधक को याद दिलाती है कि समय सभी रूपों को खत्म कर देता है, और सिर्फ़ शुद्ध चेतना ही बचती है। काली की मौजूदगी में, मौत खतरे के बजाय एक टीचर बन जाती है। इस इमेजरी के ज़रिए, खोपड़ी डर के प्रतीक से आज़ादी के पवित्र निशान में बदल जाती है, जो भक्तों को याद दिलाती है कि असली ज़िंदगी तब शुरू होती है जब अहंकार खत्म होता है।

माँ भैरवी स्तोत्र

पिंकी कुंडू

नमामि भैरवीं देवीं त्रिनेत्रां करुणामयीम।
भक्तानां वरदां नित्यां भयहारिणीम॥
रक्तवर्णां महाशक्तिं मुण्डमाला विभूषिताम।
खड्गकपालधारिणीं तां नमामि परमेश्वरीम॥
श्मशानवासिनीं देवीं सिद्धयोगिनि सेविताम।
सर्वदुःखहरां नित्यां भैरवीं प्रणमाम्यहम॥

सुबह या रात में स्नान के बाद।
दीपक जलाकर 11 या 21 बार पाठ करें।
मन में निडरता और शक्ति की भावना रखें।

ॐ ह्रीं भैरव्यै नमः॥

जब जब देवता संकट में पड़े, उन्होंने किसे पुकारा?

पिंकी कुंडू

जगदम्बा को।
शास्त्र गवाह हैं
देवी महात्म्य में देवताओं ने आदिशक्ति की स्तुति की।
देवी भागवत पुराण में स्पष्ट है — ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी शक्ति के बिना कुछ नहीं।
श्रीराम ने लंका विजय से पहले देवी का पूजन किया।
हनुमान स्वयं शक्ति के अंश हैं।
नारायण और ब्रह्मा भी आदिशक्ति से ही समर्थ होते हैं।
और हम?
आज "ये दादा", "वो दादा",
"ये अम्मा", "वो बाबा",
ट्रेंड देखकर भगवान चुन रहे हैं।
भक्ति फैशन नहीं होती।
भक्ति भीड़ देखकर नहीं होती।
भक्ति वायरल पोस्ट से नहीं होती।
सनातन सिखाता है
ईश्वर एक है, रूप अनेक हैं।
जिसे मानो, पूरे समर्पण से मानो।
पर "ट्रेंडिंग भगवान" बनाना — यह आध्यात्म नहीं, बाज़ार है।
देवी हो, देव हो, शिव हो, विष्णु हो
सब उसी एक परम तत्व की झलक हैं।
भक्ति करो
पर समझ के साथ।
श्रद्धा रखो
पर अंधानुकरण नहीं।
जय जगदम्बा

भरोसा धीरे-धीरे कायम होता है, जल्दी खो भी जाता है, न्याय व्यवस्था के लिए जिम्मेदारी से काम करें: सीजेआई सूर्यकांत

परिवहन विशेष न्यूज

सीजेआई सूर्यकांत ने कहा है कि शैक्षणिक शिक्षा सैद्धांतिक आधार प्रदान करती है, लेकिन अभ्यास के लिए अनुशासन, जिम्मेदारी और दबाव में काम करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। अदालतों में वास्तविक मुवक्किल, सख्त समयसीमा, नैतिक दुविधाएं और अप्रत्याशित परिस्थितियां शामिल होती हैं, जिनके लिए पाठ्यपुस्तकें छात्रों को पूरी तरह से तैयार नहीं कर सकतीं। उन्होंने समझाया कि पहचान मिलने में वर्षों लग सकते हैं।

भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत ने जोर देकर कहा है कि कानूनी व्यवस्था में जनता का विश्वास वकीलों के आचरण पर बहुत हद तक निर्भर करता है। उन्होंने कहा- कानूनी पेशे में जनता का विश्वास उन लोगों की ईमानदारी और निरंतरता पर निर्भर करता है जो वकालत करते हैं।

उन्होंने कहा-हर पेशेवर निर्णय चाहे वह फीस, मुवक्किल की गोपनीयता, हितों के टकराव या अदालत में व्यवहार से संबंधित हो, उस विश्वास को मजबूत या कमजोर करने में योगदान देता है। गांधीनगर में आयोजित गुजरात राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के 16वें दीक्षांत समारोह में सीजेआई सूर्यकांत ने युवा विधि स्नातकों को यह सशक्त और व्यावहारिक संदेश दिया।

सीजेआई सूर्यकांत ने कहा- विश्वसनीयता धीरे-धीरे बनती है वेबसाइट 'लॉ चक्र' के अनुसार, मुख्य न्यायाधीश द्वारा नैतिक आधारों पर जोर देना महत्वपूर्ण है। वह भी तब जब आज के माहौल में जहां संस्थानों में जनता के विश्वास पर कड़ी नजर रखी जाती है।

सीजेआई सूर्यकांत ने छात्रों को याद दिलाया कि विश्वसनीयता धीरे-धीरे बनती है और जल्दी ही खो भी जाती है। वकीलों को न केवल अपनी सफलता के लिए बल्कि न्याय व्यवस्था के स्वास्थ्य के लिए भी जिम्मेदारी से काम करना चाहिए।

वकालत में विशेषज्ञता जरूरी, औसत दर्जे से नहीं चलेगा काम सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि विधि पेशे में विशेषज्ञता को महत्व दिया जाता है, न कि औसत दर्जे को। उन्होंने न्याय व्यवस्था में जनता के विश्वास को मजबूत करने के लिए ईमानदारी, प्रशिक्षण और अकादमिक जगत और व्यवहार के बीच के अंतर को पाटने पर भी बल दिया। यह आयोजन बीते 28 फरवरी को हुआ था, जिसकी पूरी बातें अब सामने आई हैं।

वास्तविक सफलता कब मिलती है, ये भी बताया सीजेआई सूर्यकांत ने युवा विधि स्नातकों को एक सशक्त और व्यावहारिक संदेश दिया। टी-20 क्रिकेट के सरल लेकिन प्रभावशाली उदाहरण का प्रयोग करते हुए, उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि वे अपनी क्षमताओं को शीघ्र पहचानें और हर चीज में औसत दर्जे का बनने की कोशिश करने के बजाय उन्हीं क्षमताओं के इर्द-गिर्द अपना करियर बनाएं।

जस्टिस सूर्यकांत ने कहा-विधि पेशे में हर क्षेत्र में समान रूप से हाथ आजमाने वालों को सफलता नहीं मिलती। उन्होंने स्पष्ट किया कि वास्तविक सफलता तब मिलती है जब एक वकील यह समझ लेता है कि इस पेशे में उसकी वास्तविक जगह क्या है और फिर उसी दिशा में निरंतर कार्य करता है।

"सूर्यकुमार यादव से डेथ ओवरों में गेंदबाजी करने या बुमराह से चेज को संभालने की उम्मीद नहीं की जाती। उन पर भरोसा किया जाता है कि वे वही करेंगे जिसमें वे माहिर हैं और टीम इसी स्पष्टता के आधार पर बनाई जाती है।"

देशभर में 17 लाख रजिस्टर्ड वकील, 50 करोड़ लंबित केस दीक्षांत समारोह ऐसे समय में हुआ जब भारतीय कानूनी व्यवस्था गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। देश भर में 17 लाख से अधिक पंजीकृत वकीलों और 50 करोड़ से अधिक लंबित मामलों के साथ, दक्षता और विशिष्ट क्षेत्र की विशेषज्ञता की स्पष्ट आवश्यकता है।

आपकी सही जगह क्या है, यह समझना जरूरी सीजेआई सूर्यकांत ने कहा-मेरे प्रिय स्नातकों इस पेशे में आपकी सही जगह क्या है, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका सामना जल्द से जल्द करना आवश्यक है, क्योंकि यह शायद ही कभी उन लोगों को पुरस्कृत करता है जो हर चीज में समान रूप से प्रयास करते हैं।

उन्होंने स्पष्ट किया कि यह समझ तुरंत नहीं आती। यह अनुभव, आत्म-चिंतन और व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से धीरे-धीरे विकसित होती है।

"सच्ची विशेषज्ञता समय के साथ धीरे-धीरे विकसित होती है। कई सफल वकील धीरे-धीरे अपनी पहचान बनाते हैं। कानून की शिक्षा में नक्शा सिखाया जाता है, लेकिन वास्तविक अभ्यास में जमीनी हकीकत को समझना जरूरी होता है, जहां चुनौतियां जटिल और गतिशील होती हैं।"

नए कानूनों की व्याख्या के लिए विशेषज्ञ वकील जरूरी जस्टिस सूर्यकांत ने कहा-भारत में भारतीय न्याय संहिता और अन्य नए कानूनों के लागू होने के साथ ही आपराधिक कानून में व्यापक सुधार हो रहे हैं।

ऐसे समय में, नए कानूनों के सुचारू कार्यान्वयन और उचित व्याख्या के लिए कुशल और विशेषज्ञ वकीलों की आवश्यकता है। विशेषज्ञ पैरवी से देरी कम हो सकती है, दलीलों की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है और अदालतों को न्याय दिलाने में तेजी आ सकती है।

सीजेआई सूर्यकांत ने कहा-सत्यं वद, धर्मं चर अपने संबोधन के आखिर में मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने तैत्तिरीय उपनिषद के प्राचीन भारतीय ज्ञान का हवाला देते हुए स्नातकों को उनकी नैतिक जिम्मेदारी याद दिलाई। उन्होंने जिक्र करते हुए कहा-सत्यं वद, धर्मं चर (सत्य बोलो, धर्म के मार्ग पर चलो)। इसके माध्यम से उन्होंने इस बात पर बल दिया कि विधि में सफलता केवल कौशल पर ही नहीं, बल्कि चरित्र पर भी निर्भर करती है।

कैबिनेट मंत्री स्वर्गीय चौधरी दलबीर सिंह जी की जयंती पर विशेष

परिवहन विशेष न्यूज

- स्व. चौधरी दलबीर सिंह जी ने शोषित, पीड़ित व वंचित वर्ग को दिखाई दिशा
- बेदाग व स्वच्छ राजनीति की मिसाल स्व. चौधरी दलबीर सिंह जी
- स्व. चौधरी दलबीर सिंह जी की ईमानदारी, सादगी व स्पष्टवादिता ने सभी को किया प्रभावित

नरेश गुणपाल

समाज में जब शोषित, पीड़ित और मुख्यधारा से कटे हुए वर्ग की पुकार सुनने वाला कोई नहीं होता तब कोई न कोई मसीहा या देवदूत कहीं से आता है और समाज को नई दिशा दिखाने का काम करता है। पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय चौधरी दलबीर सिंह जी ने भी किसी मसीहा की भांति हमेशा शोषितों, पीड़ितों व वंचित वर्ग का मार्ग प्रशस्त किया और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में अविस्मरणीय भूमिका निभाई। इतना ही नहीं उन्होंने रचनात्मक सोच व जनकल्याणकारी कार्यों से जनता के दिलों में विशिष्ट जगह बना ली। यही कारण है कि आज भी स्वर्गीय चौ. दलबीर सिंह जी को बड़े आदर व सम्मान के साथ याद किया जाता है।

चौ. दलबीर सिंह जी का जन्म हिसार जिले के गांव प्रभुवाला में हुआ। माता श्रीमती जीवनी देवी के देहावसान के बाद पिता श्री कनीराम ने ही दलबीर सिंह का पालन-पोषण किया। विद्यालय में शिक्षाध्ययन के दौरान उन्हें समाज में व्याप्त बुराइयों का एहसास हो गया। तब उन्होंने मन ही मन ठान लिया कि वे ऐसी बुराइयों को जड़ से मिटाने के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे।

चौ. दलबीर सिंह जी का जिस समय जन्म हुआ उस समय पंजाब व हरियाणा का क्षेत्र संयुक्त पंजाब कहलाता था। उन्होंने पंजाब से अलग होते हरियाणा को बड़े करीब से देखा और बदलते राजनीतिक परिदृश्य को भी गंभीरता से समझा। चौ. दलबीर सिंह जी पर शुरू से ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पंडित जवाहरलाल नेहरू का काफी प्रभाव रहा। वे गांधीवादी विचारधारा व पंडित नेहरू की आधुनिक भारत के नवनिर्माण की विचारधारा का अनुसरण करने लगे।

उन्होंने इन विचारधाराओं का समन्वय अपने राजनीतिक जीवन में भी बखूबी किया।

बहुत से लोगों की राजनेताओं के प्रति नकारात्मक राय होती है। उनकी नज़र में अधिकतर राजनेता निष्पक्ष व बेदाग नहीं होते लेकिन चौ. दलबीर सिंह जी ने हमेशा निष्पक्ष, बेदाग व स्वच्छ राजनीति की मिसाल कायम की। उन्होंने दिखा दिया कि राजनेता चाहें तो समाज व देश की बेहतरी के लिए कितना श्रेष्ठ कार्य कर सकते हैं। दलबीर सिंह जी की इसी सोच के चलते जनता ने न केवल उन्हें अपना प्रतिनिधि चुना बल्कि उन्हें कई बार मंत्री पद पर सुशोभित होने का भी अवसर मिला।

चौ. दलबीर सिंह जी को चार बार लोकसभा सांसद बनने का मौका मिला। सिरसा लोकसभा का नेतृत्व करते हुए उन्होंने केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में मंत्री के रूप में बड़ी कुशलता व तत्परता से कार्य किया। सिंचाई, पेट्रोलियम और रसायन, भारी उद्योग, निर्माण एवं आवास, शिपिंग और परिवहन मंत्रालय सहित विभिन्न विभागों में केंद्रीय मंत्री के रूप में कार्य करते हुए चौ. दलबीर सिंह जी ने देशहित के विभिन्न निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतना ही नहीं वे मंत्री पद पर रहते हुए हमेशा मिट्टी से जुड़े रहे। इसलिए वे हमेशा ग्रामीण अंचल के विकास के लिए प्रयत्नशील रहे और विभिन्न योजनाओं को लागू करवाने में विशिष्ट भूमिका निभाई। आज भी उस दौर के बुजुर्ग लोग उनकी सादगी, ईमानदारी व उनके काम के किस्से गांव-गुहांड में सुनाते नजर आते है।

स्पष्टवादिता, ईमानदारी, निष्ठा व समर्पण के भाव को आत्मसात करते हुए चौ. दलबीर सिंह जी हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं एआईसीसी के महासचिव भी रहे। इन पदों पर रहते हुए उन्होंने न केवल जन-जन को कांग्रेस पार्टी से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया बल्कि जनहित के कार्यों में भी सक्रिय रहे। घमंड तो उन्हें कभी छू भी नहीं पाया। चाहे कोई पीड़ित या साधारण कार्यकर्ता हो या फिर किसी उच्च पद पर आसीन अधिकारी हो, वे सभी से आत्मीयता से मिलते थे और हर समस्या के निराकरण के लिए यथासंभव प्रयासरत रहते थे। दरअसल धन व बल के प्रभाव से दूर चौ. दलबीर सिंह जी सादगी व सच्चाई में विश्वास रखते थे।

चौ. दलबीर सिंह जी जैसी सोच, कार्यशैली व समाज के प्रति निष्ठा आज के दौर में विरले ही नेताओं में देखने को मिलती है। दरअसल उन्होंने छल-प्रपंच व आडंबर रहित राजनीति के नए आयाम स्थापित किए और अपने बनाए सिद्धांतों पर हमेशा कायम रहे। भाईचारे व एकजुटता के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहने वाले चौ. दलबीर सिंह जी के विचार और आदर्श हमेशा समाज व नवोदित राजनेताओं का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

अपने पिता पूर्व केंद्रीय कैबिनेट मंत्री चौ. दलबीर सिंह जी से मिली राजनीतिक विरासत को कुमारी सैलजा बखूबी संभाल रही हैं। अपने पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए कुमारी सैलजा भी निष्पक्ष, बेदाग व जनहित की राजनीति कर रही हैं। बहन सैलजा की कार्यशैली, तत्परता, अनुशासन व रचनात्मक सोच सभी को प्रभावित करती है। तीन दशकों के राजनीतिक जीवन में सर्व समाज को साथ लेकर चलते हुए बहन कुमारी सैलजा ने देश की राजनीति में सादगी, ईमानदारी व समर्पण की मिसाल कायम की है। देखा जाए तो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की राष्ट्रीय महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री, कांग्रेस कार्य समिति की सदस्य और हरियाणा कांग्रेस की पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं सिरसा लोकसभा क्षेत्र से सांसद कुमारी सैलजा सही मायने में स्वर्गीय चौ. दलबीर सिंह जी के आदर्शों को नए आयाम दे रही हैं।

जज फैसला देते वक्त करियर की ना सोचें: अलोकप्रिय फैसलों से ना डरें, पद की शपथ- न्यायिक धर्म का पालन करें - जस्टिस नागरत्ना

परिवहन विशेष न्यूज

सुप्रीम कोर्ट की जज जस्टिस बीवी नागरत्ना ने कहा कि न्यायाधीशों को अपने फैसले देते समय करियर पर पड़ने वाले प्रभाव की चिंता नहीं करनी चाहिए। भले ही अलोकप्रिय निर्णय पदोन्नति या कार्यकाल विस्तार को प्रभावित करें, फिर भी उन्हें अपने पद की शपथ और न्यायिक धर्म का पालन करना चाहिए

मंगलवार को केरल हाई कोर्ट में जस्टिस टीएस कृष्णमूर्ति अय्यर स्मृति व्याख्यान में उन्होंने 'परिवर्तनकारी संवैधानिकता' और 'मूल संरचना सिद्धांत' के संदर्भ में न्यायिक समीक्षा के महत्व पर विचार रखे। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सामूहिक हित के नाम पर कमजोर नहीं किया जाना चाहिए।

जस्टिस नागरत्ना ने कहा कि मूल संरचना सिद्धांत संविधान की न्यूनतम सीमाएं तय करता है, जबकि परिवर्तनकारी संवैधानिकता उसे आगे बढ़ने की दिशा देती है। इन सीमाओं की निगरानी न्यायपालिका द्वारा न्यायिक समीक्षा के जरिए ही संभव है।

जस्टिस नागरत्ना के संबोधन की बड़ी बातें- परिवर्तनकारी संवैधानिकता का इस्तेमाल व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कम करने या राज्य की दमनात्मक शक्तियों को सामान्य बनाने के लिए नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि हैबियस कॉर्पस जैसे अधिकार संविधान की मूल भावना का हिस्सा हैं और इन्हें कमजोर करना संवैधानिक सीमाओं के खिलाफ होगा।

न्यायिक समीक्षा के तहत अदालतों को कई बार कानूनों को असंवैधानिक घोषित करना, कार्यपालिका की कार्रवाई पर रोक लगाना या संसद द्वारा पारित संवैधानिक संशोधनों को भी निरस्त करना पड़ता है। ऐसे फैसलों के राजनीतिक प्रभाव हो सकते हैं, इसलिए इन्हें लेना आसान नहीं होता।

जस्टिस नागरत्ना ने कहा कि- न्यायपालिका की स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए न्यायाधीशों को कार्यकाल की सुरक्षा, पारदर्शी और व्यवस्थित नियुक्ति प्रक्रिया तथा प्रशासनिक व वित्तीय स्वायत्तता मिलनी चाहिए। इससे किसी भी प्रकार के अप्रत्यक्ष दबाव को रोका जा सकता है।

असहमति वाले फैसले भी न्यायिक स्वतंत्रता का हिस्सा

उन्होंने कहा कि न्यायाधीशों को अपने सहकर्मियों से अलग राय रखने और उसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। अलग या असहमति वाले फैसले न्यायिक बौद्धिक स्वतंत्रता का प्रतीक हैं। न्यायिक राय किसी समझौते का दस्तावेज नहीं, बल्कि संवैधानिक विश्वास की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है।

अपने संबोधन में जस्टिस नागरत्ना ने जस्टिस टीएस कृष्णमूर्ति अय्यर को न्याय और समानता के प्रति समर्पित न्यायाधीश बताया। उन्होंने कहा कि उनकी विनम्रता, संवेदनशीलता और न्याय के प्रति प्रतिबद्धता आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनी रहेगी।

सफ़लता, दृष्टि और चुनौतियों का संयोग

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

हमारा इतिहास सफ़लता दृष्टि और चुनौतियों को स्वीकारने के संयोग को प्रमाणित करता है जहाँ दृष्टि वह दीपक है जो अंधेरे में रास्ता दिखाती है और चुनौतियाँ वे पथरीले रास्ते हैं जिन्हें पार करके ही शिखर पर पहुँचा जाता है, स्वामी विवेकानंद की दृष्टि थी भारत को आध्यात्मिक शक्ति बनाना उन्होंने शिकागो धर्म संसद में वेदांत का उद्घोष किया लेकिन चुनौतियाँ कम न थीं,सामाजिक रूढ़ियाँ गरीबी स्वास्थ्य समस्याएँ फिर भी उन्होंने चुनौती स्वीकार की और रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर लाखों को प्रेरित किया एपीजे अब्दुल कलाम की दृष्टि थी भारत को विकसित राष्ट्र बनाना, इसरो और ड्रैगन मिसाइल की चुनौतियों का सामना किया मिसाइल मैन बनकर राष्ट्रपति बने उनकी आत्मकथा विंग्स ऑफ़ फायर इस संयोग की गवाही देती है रानी लक्ष्मीबाई की दृष्टि थी स्वतंत्रता की जंग लड़ना 1857 की क्रांति में झाँसी की रानी ने ब्रिटिश सेना से लोहा लिया घोड़े पर तलवार लहराती हुई अमर हो गईं धीरूभाई अंबानी की दृष्टि थी भारत में विश्वस्तरीय उद्योग खड़ा करना गुजरात के छोटे गाँव से निकले थे,उन्होंने व्यापार से शुरू किया चुनौतियों को स्वीकार कर रिलायंस को साम्राज्य बनाया आज मुकेश अंबानी उसी दृष्टि के वारिस हैं किरण मजूमदार-शॉ बेंगलुरु की एक साधारण लड़की की दृष्टि थी बायोटेक में क्रांति लाना 1978 में बायोकॉन शुरू किया बैंक ऋण न मिलना पुरुष-प्रधान क्षेत्र महिला होने की चुनौतियाँ, फ़िर भी आज वे एशिया की सबसे धनी महिलाओं में हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दृष्टि थी विकसित भारत का निर्माण चाय बेचने वाले से गुजरात के मुख्यमंत्री फ़िर देश के प्रधानमंत्री बने कोविड-19 आपदा आर्थिक मंदी सीमा विवाद जैसी चुनौतियों को स्वीकार कर डिजिट्ल इंडिया मेक इन इंडिया जैसे अभियान चलाए अब भारत विश्व की सबसे तेज़ बढ़ती अर्थव्यवस्था है ये सभी उदाहरण सिद्ध करते हैं कि दृष्टि बिना चुनौती अधूरी है और चुनौती बिना दृष्टि व्यर्थ इसलिए यदि आपका सपना है तो पहले दृष्टि निखारें, ध्यान योग से आंतरिक शक्ति जागृत करें फ़िर हर बाधा को सीढ़ी बनाएँ भारतीय संस्कृति में भगवद्गीता यही सिखाती है कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन,दृष्टि रखो फ़ल की चिंता मत करो चुनौतियाँ आएँगी लेकिन इन्हें स्वीकार करो सफ़लता तुम्हारी होगी।

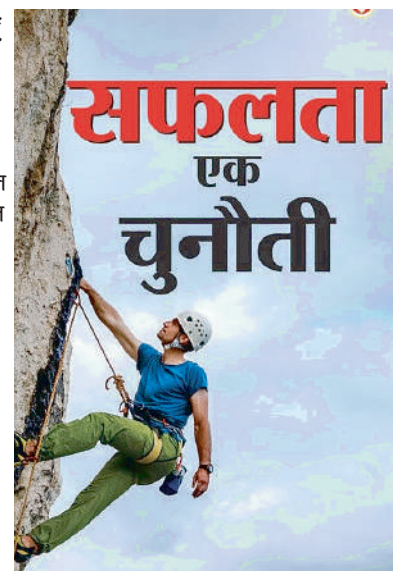

एक्सपायर्ड उत्पादों की री-लेबलिंग का भंडाफोड़, मुख्य सप्लायर अकरम अंसारी गिरफ्तार

क्राइम ब्रांच ने दिल्ली में एक्सपायर हो चुके खाद्य और कॉस्मेटिक उत्पादों पर लेबल बदलकर बेचने वाले मुख्य सप्लायर अकरम अंसारी को गिरफ्तार किया है। शहीदनगर स्थित उसके गोदाम से भारी मात्रा में एक्सपायर्ड उत्पाद बरामद हुए। यह गिरफ्तारी पहले पकड़े गए ओमप्रकाश की निशानदेही पर हुई, जो अकरम से ये सामान खरीदता था। पुलिस गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश कर रही है।

नई दिल्ली। नामचीन कंपनियों के एक्सपायर हो चुके खाद्य और कॉस्मेटिक्स प्रोडक्ट्स पर लेवल बदलकर दोबारा खुले बाजार में नए स्टॉक के तौर पर बेचने में शामिल मुख्य सप्लायर को क्राइम ब्रांच ने गिरफ्तार किया है। आरोपित की पहचान सीमापुरी के अकरम अंसारी के रूप में हुई है। इसके शहीदनगर स्थित गोदाम से एक्सपायर हो चुके भारी मात्रा में घरेलू सामान, बेबी केयर प्रोडक्ट्स, एनर्जी ड्रिंक्स और कास्मेटिक्स का भंडार बरामद हुआ है।

इससे पहले इससे एक्सपायर सामान खरीदकर बेचने वाले आरोपित ओमप्रकाश को क्राइम ब्रांच ने गिरफ्तार किया था। उसकी निशानदेही पर ही मुख्य सप्लायर को गिरफ्तार किया गया। पुलिस इससे पूछताछ कर गिरोह में शामिल अन्य आरोपितों के बारे में पूछताछ कर रही है।

क्राइम ब्रांच के उपायुक्त विक्रम सिंह के मुताबिक, इससे पहले 28 फरवरी को गिरफ्तार हुए आरोपित ओम प्रकाश से पूछताछ पर कार्रवाई करते हुए एसीपी सुनील श्रीवास्तव की देखरेख में और इंस्पेक्टर आशीष शर्मा के नेतृत्व में गठित टीम ने रस्तोगी कंपाउंड, शहीद नगर स्थित एक गोदाम पर छापेमारी की और गोदाम से भारी मात्रा में एक्सपायर हो चुके प्रोडक्ट बरामद किए।

मथुरा में लट्ठमार, काशी में भक्ति, अयोध्या में संतों की होली; दिल्ली समेत देशभर में छाया रंगों का खुमार

देश भर में होली का उल्लास छाया हुआ है, खासकर दिल्ली, मथुरा, वाराणसी और अयोध्या में। दिल्ली में कलर पार्टी और रेन डांस हो रहे हैं, जबकि मथुरा में लट्ठमार होली और मंदिरों में फाग गीत गाए जा रहे हैं। काशी में गंगा घाटों पर आध्यात्मिक रंग है, और अयोध्या में राम मंदिर व हनुमानगढ़ी में संत-भक्त गुलाल खेल रहे हैं। सुहावने मौसम में लोग गुझिया का आनंद ले रहे हैं, सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम भी किए गए हैं।

नई दिल्ली। होली की धूम आज देश भर में छाई हुई है। खासकर दिल्ली, मथुरा, वाराणसी और अयोध्या में रंगों और राग का उल्लास देखने को मिल रहा है। आज रंग वाली है। लोग गुलाल, अबीर और पानी से एक-दूसरे को रंगने में जुटे हैं। दिल्ली में स्टेडियम और कॉलोनियों में बड़े-बड़े कलर पार्टी, डीजे और रेन डांस का आयोजन हो रहा है, जहां युवा और परिवार मस्ती में सराबोर हैं।

मथुरा-वृंदावन में भगवान कृष्ण की लीला के अनुरूप होली का उत्सव चरम पर है, जहां बांके बिहारी मंदिर और अन्य मंदिरों में भक्त रंग खेलते हुए फाग गीत गा रहे हैं। ब्रज क्षेत्र की लट्ठमार होली और रंगोत्सव की परंपरा आज भी जारी है। यहां रंगों के साथ भक्ति और प्रेम का अद्भुत संगम देखा जा रहा है और टोलियां सड़कों पर नाच-गाकर उत्सव मना रही हैं।

काशी के मंदिरों में होली की धूम

काशी में गंगा घाटों और काशी विश्वनाथ मंदिर के आसपास होली का आध्यात्मिक रंग छाया हुआ है, जहां होली गीतों के साथ लोग रंगोत्सव को जारी रखे हुए हैं। अयोध्या में हनुमानगढ़ी और राम मंदिर परिसर में भक्त गुलाल लगाकर होली मना रहे हैं, जहां नागा साधु और संत भी शामिल होकर रंगों का आनंद ले रहे हैं। पूरे यूपी में यह त्योहार एकता, खुशी और सांस्कृतिक विविधता से मनाया जा रहा है।

लोगों की टोलियां घर-घर जाकर खेल रही होली

वहीं, मौसम सुहाना होने से होली की मस्ती दोगुनी हो गई है और लोगों की टोलियां घर-घर जाकर रंग खेल रही हैं। लोग गुझिया, मालपुआ और मिठाइयों का लुत्फ उठाते हुए एक-दूसरे को शुभकामनाएं दे रहे हैं। इसी के साथ सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम के साथ प्रशासन ने भीड़ प्रबंधन सुनिश्चित किया है, ताकि हर कोई बिना किसी परेशानी के होली का आनंद ले सके।

महिलाओं के लिए नकद हस्तांतरण : भाजपा के धोखे का पर्दाफाश

(आलेख : उत्कर्ष भारद्वाज, अनुवाद : संजय पराते)

पिछले कुछ सालों में, हमने देखा है कि कैसे महिलाओं को निशाना बनाने वाली प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण योजना कई राज्यों में भारतीय जनता पार्टी की चुनावी रणनीति का एक अहम हिस्सा बन गई हैं। अब, जब हम पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों की ओर बढ़ रहे हैं, तो यह बहुत ज़रूरी हो जाता है कि हम प्रत्यक्ष बैंक हस्तांतरण (डीबीटी) योजना के इस हथियार पर फिर से विचार करें, जिसे भाजपा और उसके सहयोगियों ने बार-बार और सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया है। हम इन योजनाओं की डिज़ाइन, उसके समय और लागू करने में एकसारता देखते हैं, जहाँ अहम चुनावी मौकों पर बड़े-बड़े वादे किए जाते हैं, और वोट मिलने के बाद उन्हें आधे-अधूरे ढंग से पूरा किया जाता है, लाभार्थियों को चुपचाप निकाल दिया जाता है, नौकरशाहाना तरीके से उन्हें बाहर कर दिया जाता है, या पूरी तरह से छोड़ दिया जाता है।

राज्यों में योजनाएं

बिहार में, एनडीए सरकार ने मुख्यमंत्री महिला रोज़गार योजना को एक प्रमुख मॉडल के तौर पर पेश किया था, जिसके तहत, 2025 के आखिर तक, आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार लगभग 1.56 करोड़ महिलाओं को 15,600 करोड़ रुपये से ज़्यादा दिए गए। इस राशि का हस्तांतरण नवंबर 2025 के विधानसभा चुनाव से पहले के महीनों में तीन बड़े चरणों में किया गया, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा राजनैतिक सादृश्यता सुनिश्चित हो सके। हर लाभार्थी को 10,000 रुपये का आंकड़ा समाचार-शीर्षकों में खूब प्रचारित किया गया, साथ ही यह दावा भी किया गया कि यह योजना महिलाओं को व्यावहारिक रोज़गार पाने में मदद करेगी। बहरहाल, इस कहानी का खोखलापन खुद योजना के ढांचे से ही सामने आ जाता है। शुरुआती 10,000 रुपये सिर्फ़ पहली किश्त के तौर पर दिए जाने थे। व्यावसायिक योजना के लिए 2 लाख रुपये तक का बहुत बड़ा वादा किया गया था। यह हिस्सा छह महीने की समीक्षा प्रक्रिया पर निर्भर था। इस बात के बहुत कम सबूत हैं कि बड़ी संख्या में लाभार्थियों ने कभी इस दूसरे चरण का फ़ायदा उठाया हो। ज़्यादातर महिलाओं के लिए, यह योजना सिर्फ़ एक बार का हस्तांतरण ट्रांसफर थी, न कि टिकाऊ रोज़गार के लिए मूल पूंजी जैसा, जैसा कि इसके विज्ञापन में बताया गया था।

इस सीमित वितरण में भी प्रक्रिया से जुड़ी गंभीर और नैतिक चिंताएँ थीं। मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए सरकारी फंड के सीधे इस्तेमाल पर सवाल उठाते हुए, पटना हाई कोर्ट में दायर की गई एक जनहित याचिका में बताया गया कि आदर्श आचार संहिता लागू होने के बाद भी पैसे बांटना जारी रहा। कई ज़िलों से मिली रिपोर्ट में ₹कट मनीर के एक संस्थागत प्रणाली के उभरने की ओर इशारा किया गया, जहाँ स्थानीय दलाल, जिन्हें सामुदायिक कार्यकर्ता कहा जाता है, इस ₹सुविधा सेवार के बदले में हर 10,000 रुपये के अनुदान से 100 रुपये से 2,000 रुपये तक की रकम ऐंठते थे। राजनैतिक विश्लेषकों ने एनडीए की जीत को सुनिश्चित करने में इस योजना की भूमिका को बड़े पैमाने पर स्वीकार किया है।

मध्य प्रदेश का मामला बिहार से अलग है, लेकिन यह भी उतनी ही चौंकाने वाली तस्वीर

दिखाता है। लाडली बहना योजना, जो पंजीकृत लाभार्थियों को प्रति माह 1,250 रुपये का भुगतान करती है (2025 में इसे बढ़ाकर 1,500 रुपये किया गया), उन वादों में से एक था जो राज्य में भाजपा की सत्ता में वापसी के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ। बहरहाल, 2023 में चुनाव संपन्न होने के बाद, बढ़ती मांग के बावजूद, नए पंजीकरण रुके रहे, जिससे यह योजना प्रभावी रूप से प्रशासनिक ठंडे बस्ते में चली गई। बाद के अभियानों के दौरान, मासिक राशि को 3,000 रुपये तक बढ़ाने का वादा किया गया था। बहरहाल, वास्तव में केवल 250 रुपये की मामूली वृद्धि हुई। यहां, वादे से मुकरने के साथ ही भुगतान में भी लगातार देरी हुई, जिससे इस आय पर बजट बनाने वाली कमजोर महिलाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अतिरिक्त वित्तीय संकट में फंस गया। इसके अलावा, इस योजना में 21 साल से कम उम्र की अविवाहित महिलाओं या 60 साल से ज़्यादा उम्र की अविवाहित महिलाओं, और तय आय सीमा पार करने वाले परिवारों को शामिल नहीं किया गया है, जिससे नौकरशाहीपूर्ण तरीके से उन्हें ₹योग्य₹ और ₹अयोग्य₹ गरीबों की श्रेणी में बांट दिया गया हैं।

महाराष्ट्र में, मुख्यमंत्री माझी लाड़की बहिन योजना का हाल भी कुछ अलग नहीं था। इसे राज्य में चुनाव से कुछ महीने पहले ही जुलाई 2024 में 1,500 रुपये प्रति महीने पर शुरू किया गया था। चुनाव प्रचार के दौरान, सत्ताधारी महायुति गठबंधन के नेताओं ने अपनी जीत के बाद इस रकम को बढ़ाकर 2,100 रुपये करने के कई बार वादे किए थे। लेकिन चुनाव खत्म होने के बाद, 2025 के बजट में इस बढ़ोतरी का कोई इंतज़ाम नहीं किया गया। तब वरिष्ठ मंत्रियों ने भी इस बात से इंकार कर दिया कि ऐसा कोई वादा किया गया था। उन्होंने चुनाव प्रचार के दौरान दिए गए बयानों को बस ₹बढ़ा-चढ़ाकर किया गया वादा₹ बताया। हमने यह भी देखा कि किस तरह इसे क्रियान्वित करने का तरीका ही लोगों को इस योजना से बाहर करने का एक ज़रिया बन गया। सरकार ने स्थानीय निकाय चुनाव से पहले ई-केवाईसी पूरा करना ज़रूरी कर दिया, जिससे बड़े पैमाने पर तकनीकी कठिनाइयां पैदा हुईं, जिनमें वन टाइम पासवर्ड (ओटीपी) में देरी, सर्वर क्रैश और कनेक्टिविटी की दिक्कतें शामिल थीं। लेकिन ये कठिनाईयां यहीं तक सीमित नहीं थीं। इस प्रक्रिया के कारण लगभग एक करोड़ महिलाएं अयोग्य हो गईं, जो समय पर प्रक्रिया पूरा नहीं कर पाईं। यह घटना निर्बाध डिजिटल गवर्नेंस के दावों और कमज़ोर अधोसंरचना में काम करने वाले लाभार्थियों की जीवंत हकीकत के बीच की खाई का सबूत थी।

हरियाणा की लाडो लक्ष्मी योजना शायद इस बात का सबसे स्पष्ट उदाहरण है कि कैसे एक सार्वभौमिक वादे को एक संकीर्ण रूप से लक्षित और वित्तीय रूप से सुविधाजनक कार्यक्रम में तब्दील कर दिया जाता है। भाजपा के 2024 के हरियाणा संकल्प पत्र में सभी महिलाओं को प्रति माह 2,100 रुपये देने का वादा किया गया था। लेकिन सितंबर 2025 में योजना की आधिकारिक अधिसूचना में बहुत सारे प्रतिबंधात्मक पात्रता मानदंड दिखाए गए। इस योजना के लिए पात्रता के लिए परिवार की वार्षिक आय 1 लाख रुपये तक सीमित होनी चाहिए। यह सीमा इतनी कम है कि कमजोर परिवारों के बड़े हिस्से स्वतः ही बाहर हो गए। आवेदकों को राज्य में 15 साल तक लगातार निवास को भी साबित करना आवश्यक था, जिसने प्रवासियों और बड़ी संख्या में विवाहित महिलाओं को वंचित कर दिया। कोई भी परिवार, जिसे कोई अन्य सामाजिक सुरक्षा पेंशन मिलती है, या यदि उसके किसी भी सदस्य को किसी भी क्षमता में सरकारी नौकरी मिली है, या कोई भी परिवार जो आयकर देता है, वह इस योजना के लिए अपात्र था। लेकिन, असलियत तब और भी बुरी निकली, जब शुरुआती आंकड़ों से पता चला कि सिर्फ़ 5.22 लाख महिलाओं को ही पहली अदायगी हुई है। जिन मतदाताओं से इस योजना का वादा किया गया था, यह आंकड़े उन मतदाताओं के छह प्रतिशत से भी कम को कवर करते हैं। इससे यह योजना एक दिखावटी चीज़ बन जाती है, जिसकी असल पहुंच को नौकरशाहाना डिज़ाइन के ज़रिए निम्न स्तर तक पहुंचा दिया गया है।

दिल्ली में, 2025 के विधानसभा चुनावों के दौरान भाजपा का सबसे बड़ा चुनावी वादा महिला समृद्धि योजना था। इस योजना को बहुत जोर-शोर से प्रचारित किया गया था, जिसमें राजधानी की महिलाओं को हर महीने 2,500 रुपये देने का वादा किया गया था, लेकिन आज तक इसका क्रियान्वयन नहीं किया गया है। 8 मार्च, 2025 को, भाजपा सरकार ने औपचारिक रूप से इस योजना को मंजूरी दी और धूमधाम से पंजीयन शुरू किया गया, लेकिन फिर से लोगों को निराशा हुई। घोषणा के बाद कुछ नहीं हुआ, न तो कोई बजट आबंटन हुआ और न ही कोई फंड जारी किया गया। यह योजना भी, दूसरे राज्यों की कुछ योजनाओं की तरह, सिर्फ़ मंत्रिमंडल के प्रस्तावों और प्रेस बयानों में ही मौजूद है।

उत्तराखंड ने भी एक बार फिर उसी पैटर्न का एक और नमूना दिखाया है। राज्य सरकार ने ₹बिहार की तरह₹ महिलाओं और युवाओं के लिए प्रत्यक्ष बैंक हस्तांतरण योजना शुरू करने का अपना इरादा बताया। महीनों बाद, यह भी सिर्फ़ एक हेडलाइन बनकर रह गई है और बजट मंजूरी का इंतज़ार कर रही है। न कोई दिशा-निर्देश है और न ही कोई तारीख तय है।

राज्य सरकारों पर बोझ

केंद्र सरकार के स्तर पर, विचारधारात्मक रूप से ये तरीके एक जैसे लगते हैं। महिलाओं के लिए कोई भी सार्वभौमिक मासिक नकद हस्तांतरण शुरू करने से साफ़ मना कर दिया गया है। इसके बजाय, प्रधानमंत्री मुद्रा के तहत बिना गारंटी वाले ऋण और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के ज़रिए स्वयं सहायता समूहों को लक्षित मदद देने पर ज़ोर दिया गया है।

ऊपर बताई गई बातों का सामान्य आधार वित्तीय पूंजी और नव-उदारवादी राजकोषीय अनुशासन के ढांचागत रुकावट से निर्मित होता है। राज्य सरकारें, जो कर्ज़ के बोझ तले दबी हैं और घाटे के लक्ष्य से बंधी हैं, उन्हें कल्याणकारी खर्चों को इस तरह से जांचना पड़ता है कि जमा करने की प्राथमिकता में कोई दिक्कत न आए। यहां, गरीब महिलाओं को कल्याणकारी मदद सिर्फ़ उसी हद तक दी जाती है, जब तक कि इससे ऋणदाताओं के हितों को कोई खतरा न हो। ये योजनाएं न सिर्फ़ दबाव कम करने के लिए राजकोषीय सुरक्षा वाल्व का काम करती हैं, बल्कि वे वर्तमान समय में संरक्षण का नया तरीका भी दिखाती हैं। बहुत ज़्यादा अदाकारी के साथ किए गए हस्तांतरण उत्सव में, जहां नेता प्रतीकात्मक रूप से फंड जारी करते हैं, लाभार्थियों को ₹बहना₹ या ₹लाडली₹ कहकर, राज्य व्यक्तिगत भलाई का रिश्ता बनाकर एक पारिवारिक मुहावरा अपनाने की कोशिश करता है। इस तमाशे का मकसद सामाजिक अधिकारों के गैर-व्यक्तिगत चरित्र को छिपाना और नागरिकों को उपहार पाने वाली प्रजा के रूप में फिर से बदलना है। इसका नतीजा यह होता है कि महिलाओं का गैर-राजनीतिकरण होता है, क्योंकि उन्हें खुद को लोकतांत्रिक राजनीति के अधिकार रखने वाले सदस्यों के बजाय याचक के तौर पर देखने के लिए बढ़ावा दिया जाता है।

महिलाओं को छोटे-मोटे विक्रेता बनने के लिए या घर से किए जाने वाले कामों को करने के लिए मजबूर करना, जिसके लिए उनके पास कोई उत्पादक संपत्ति नहीं होती या फिर उनकी सामूहिक संगठन या सुरक्षित बाजार तक पहुंच नहीं होती, सिर्फ श्रम की सुरक्षित सेना को बढ़ाने का काम करता है। ये उपाय गरीबों को सिर्फ गुज़ारे का एक सहारा देते हैं, जो कम वेतन देने वाले पूंजीवाद को सब्सिडी देते हैं और व्यापक मजदूर वर्ग को अनुशासन में रखते हैं। ऋण छोटे बुर्जुआ वर्ग के कुछ हिस्सों को वित्तीय प्रणाली में उलझा देते हैं, जबकि राज्य स्तर पर मामूली हस्तांतरण गरीब तबके के बीच की नाराज़गी को मैनेज करते हैं।

सिर्फ चुनावी हथकंडे

इन योजनाओं को शुरू करने और बड़े पैमाने पर पैसे बांटने का समय इस बात का सबूत है कि इसका मुख्य मकसद सत्ताधारी पार्टी को चुनावी फ़ायदा पहुंचाना है।

बिहार और महाराष्ट्र में यह सबसे ज़्यादा साफ दिखता है। मौजूदा भाजपा सरकारें विपक्ष पर भारी बढ़त हासिल करने के लिए राज्य के संसाधनों का इस्तेमाल करती हैं, जिससे निष्पक्ष चुनावी मुकाबले का सिद्धांत खत्म हो जाता है। इस बीच, केंद्र की वित्तीय क्षमता को बड़ी पूंजी को फ़ायदा पहुंचाने वाले अधोसरंचना और प्रतिगामी कॉर्पोरेट करों में छूट के लिए बचाकर रखा जाता है, जबकि सामाजिक कल्याणकारी कार्यों का खर्च पहले से ही दबाव में चल रहे राज्य के बजट पर डाल दिया जाता है।

इन सभी योजनाओं में उत्पादक संपत्ति को हस्तांतरण करने की कोई भी प्रतिबद्धता साफ़ तौर पर गायब है। ज़मीन, सहकारी डेयरियां, टूल बैंक, या सबके मालिकाना हक वाली प्रसंस्करण इकाईयां असली सशक्तिकरण का आधार बन सकती हैं। उन्हें बाहर रखने से व्यक्तिगत नकद हस्तांतरण के पीछे के इरादों का पता चलता है, जिसका मकसद है अलग-अलग तरह के उपभोग को बढ़ावा देना और किसी संरक्षक पर निर्भरता को बढ़ाना। नेता खुद को प्रत्यक्ष संरक्षक के तौर पर पेश करते हैं, ताकि सार्वजनिक संस्थाओं पर लोगों का भरोसा कमज़ोर हो और अधिकार-आधारित कल्याणकारी प्रणालियों को दरकिनार किया जा सके। कल्याणकारी काम नागरिकता में शामिल किसी चीज़ के बजाय व्यक्तित्व पर निर्भर हो जाता है। वितरण का यह नाटक सांस्थानिक भरोसे को और कमज़ोर करता है, और यह कहना सही होगा कि संस्थागत मध्यस्थता का कमजोर होना आज की तानाशाही प्रवृत्ति की एक खास पहचान है।

भाजपा और उसके सहयोगी दल जिसे महिला-केंद्रित शासन के नए दौर के तौर पर पेश कर रहे हैं, वह कुछ और नहीं, बल्कि बढ़ा-चढ़ाकर किए गए वादे, वितरण में कटौती और सोची-समझी वापसी का मिला-जुला रूप है। भाजपा की बातों और हकीकत के बीच यह विरोधाभास एक ऐसी रणनीति के परिचालन का सार है, जिसमें कल्याणकारी काम सिर्फ़ एक चुनावी ज़रिया है और महिलाओं की गरीबी एक ऐसा संसाधन है, जिसे प्रबंधित किया जाना है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

दिल्ली विधानसभा ने 31 देशों के राजनयिकों संग मनाया होली, दिया विश्व शांति का संदेश

दिल्ली विधानसभा ने वैश्विक तनाव के बीच शांति का संदेश दिया। अध्यक्ष द्वारा आयोजित होली मिलन समारोह में 31 देशों के राजदूतों और राजनयिकों ने भाग लिया। उन्हें भगवान बुद्ध की प्रतिमा भेंट कर शांति व भाईचारे का महत्व बताया गया। इस आयोजन में भारतीय संस्कृति की झलक दिखी और यह भारत के बढ़ते कूटनीतिक संबंधों को दर्शाता है। राजनयिकों ने फूलों की होली का आनंद लिया।

नई दिल्ली। अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच चल रहे तनाव तथा युद्ध की आशंका के कारण विश्व स्तर पर अशांति का माहौल है। ऐसे तनावपूर्ण समय में दिल्ली विधानसभा ने पूरे विश्व को शांति का संदेश दिया। विधानसभा अध्यक्ष द्वारा आयोजित होली मिलन समारोह में इराक, चीन समेत 31 देशों के राजदूत, उच्चायुक्त और अन्य वरिष्ठ राजनयिकों ने हिस्सा लिया। अध्यक्ष ने सभी अतिथियों को भगवान बुद्ध की प्रतिमा भेंट की और शांति व भाईचारे का संदेश दिया।

इस अवसर पर भारतीय संस्कृति की सुंदर झलक भी देखने को मिली। पहली बार हुए इस तरह के आयोजन में वेनेजुएला, बांग्लादेश और वियतनाम जैसे देशों की उपस्थिति ने वैश्विक स्तर पर भारत के बढ़ते कूटनीतिक संबंधों को प्रदर्शित किया है। राजनयिकों ने होली का आनंद लिया, मंच पर पहुंचकर फूलों की होली खेली, पारम्परिक कार्यक्रम में भाग लिया और होली के गीतों पर झूमे।

इसका आयोजन दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता की ओर से किया गया था। ऐतिहासिक विधानसभा परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में श्रीलंका की उच्चायुक्त प्रदीपा महिषिनी कोलोने, चीन के राजदूत जू फेइहोंग, नेपाल के राजदूत डा शंकर प्रसाद शर्मा, मारीशस की उच्चायुक्त शीलाबाई बापू, इराक के चार्ज डी'अफेयर्स ओडे हातिम मोहम्मद, मोल्दोवा की चार्ज डी''''अफेयर्स डाना पायू और दक्षिण अफ्रीका के उच्चायुक्त प्रोफेसर अनिल सूकलल सहित अन्य देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें रूसी संघ, चिली, सूडान आदि देशों के प्रतिनिधि भी शामिल थे।

विधानसभा अध्यक्ष ने अपने संबोधन में प्रह्लाद और होलिका की कथा का उल्लेख करते हुए कहा कि सत्य और नैतिक साहस की हमेशा जीत होती है। उन्होंने राधा-कृष्ण की परंपराओं का स्मरण करते हुए होली को मानवता और प्रेम का प्रतीक बताया। समारोह का एक आकर्षण केंद्रीय विधान परिषद के पहले भारतीय अध्यक्ष विट्ठल भाई पटेल पर आधारित एक डाक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग थी। इस फिल्म ने भारत की समृद्ध संसदीय विरासत और स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विधायी स्वतंत्रता की रक्षा में उनके योगदान को जीवंत किया।

इस 90 मिनट के सांस्कृतिक कार्यक्रम में भारत की कलात्मक धरोहर की झलक देखने को मिली। इसमें कथक नृत्य, पारंपरिक कठपुतली प्रदर्शन और मध्य प्रदेश के मल्लखंब के प्रदर्शन ने मेहमानों को प्रभावित किया। विभिन्न राज्यों के लोक नृत्यों ने भारत की 'विविधता में एकता' को बखूबी दर्शाया। समारोह का समापन गणमान्य व्यक्तियों और राजनयिकों के बीच परस्पर शुभकामनाओं के आदान-प्रदान के साथ हुआ, जिसने मित्रता और आपसी सम्मान के बंधन को और मजबूत किया।

इस अवसर पर केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा, दिल्ली विधानसभा के उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट, दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी और विधायक अरविंदर सिंह लवली, कैलाश गहलोत, संजय गोयल, डा. अनिल गोयल आदि शामिल हुए।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी द्वारा देश सेवा की दिशा में पहला कदम

● डॉ. विजय गर्ग

भारत के युवा वर्ग के लिए देश की सेवा करना सिर्फ एक नौकरी नहीं है, बल्कि एक बड़ी जिम्मेदारी और गर्व की बात है। इस सपने को साकार करने का सबसे महत्वपूर्ण मंच नेशनल डिफेंस एकेडमी (एनडीए). यह संस्था तीन सैन्य दलों में से एक है: थल सेना, नौसेना और वायु सेना।

स्थापना और महत्व

एनडीए. की स्थापना 1954 में हुई थी और यह पुणे के निकट खडकवासला में स्थित है। यह दुनिया का पहला त्रि-सेवा अकादमी है जहां तीन सैन्य बलों के कैडेट एक साथ तैयारी करते हैं। यहां न केवल सैनिक प्रशिक्षण, बल्कि अकादमिक शिक्षा, नैतिक मूल्य और नेतृत्व गुण भी विकसित किए जाते हैं।

चयन प्रक्रिया

एनडीए. में प्रवेश पाना आसान नहीं है।उम्मीदवारों को यूपीएससी में प्रवेश करना होगा। द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है। इसके बाद सेवा चयन बोर्ड द्वारा साक्षात्कार और चिकित्सा जांच की जाती है। यह प्रक्रिया युवाओं की बुद्धि, शारीरिक क्षमता और मनोबल का पूर्ण परीक्षण करती है।

कठोर प्रशिक्षण और अनुशासन

एनडीए. में तीन साल की कठोर तालीम के दौरान कैडेटों को अनुशासन, समय का मूल्य, टीम वर्क और नेतृत्व के गुण सिखाए जाते हैं। सुबह की परेड से लेकर खेलों और शैक्षणिक कक्षाओं तक हर दिन नियमित और संयमित होता है। यह तालीम उन्हें कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़ता से खड़े होने की शक्ति देता है।

व्यक्तिगत विकास का केंद्र

एनडीए. सैनिक न केवल अधिकारी बनाता है, बल्कि एक संपूर्ण व्यक्ति भी बनाता है। यहां कैडेटों को ईमानदारी, देशभक्ति और मानवता के मूल्य सिखाए जाते हैं। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद उन्हें अपने-अपने सेवा अकादमियों में अगले चरण के लिए भेजा जाता है।

उत्कृष्ट

नेशनल डिफेंस अकादमी युवाओं के लिए देश सेवा की ओर पहला और मजबूत कदम है। यह वह जगह है जहां सपने वास्तविकता बनते हैं और आम युवा देश के बहादुर अधिकारी बन जाते हैं। एनडीए इसमें शामिल होना न केवल एक उपक्रम है, बल्कि देश के प्रति समर्पण का सच्चा प्रतीक है।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

माता-पिता, अब और नहीं!

डॉ विजय गर्ग

इंसान अपने जीवन में बहुत कुछ खोकर भी पुनः प्राप्त कर लेता है। धन, अवसर, मित्रता या पद। लेकिन एक नुकसान ऐसा होता है जो कभी पूरा नहीं हो पाता। माता-पिता का विच्छेद। माता- पिता ऐसे होते हैं जिनके छाया के नीचे बच्चा निर्भीक होकर बढ़ता है। जब यह छाया हट जाती है, तो जीवन की धूप काफी तेज महसूस होती है।

माँ की ममी और पिता की कठोरता दोनों ही बच्चे के चरित्र का आधार बनते हैं। माँ बिना कहे दिल की बात समझ लेती है, जबकि पिता जीवन भर अपनी इच्छाओं को त्यागकर बच्चों के सपनों को साकार करने में लगे रहते हैं। अक्सर हम बड़े होकर उनके बलिदान को समझते हैं, लेकिन कभी-कभी तब तक बहुत देर हो जाती है।

आधुनिक युग में दौड़-धूप, रोजगार की चिंताओं और मोबाइल दुनिया ने पारिवारिक संबंधों में दूरी पैदा कर दी है। बच्चे घर पर रहते हुए भी अपने माता-पिता से बात करने के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं। कभी-कभी बड़े बुजुर्ग अकेलेपन का शिकार हो जाते हैं। यह हमारी सामाजिक सोच के लिए चिंता का विषय है। हमें समझना होगा कि माता-पिता की सेवा और सम्मान केवल कर्तव्य नहीं है, बल्कि हमारी संस्कृति का दृष्टिकोण है।

जब माता-पिता हमारे साथ होते हैं, तो उनकी सराहना की जानी चाहिए। उनके साथ बिताया गया एक छोटा सा पल भी कल के लिए अविस्मरणीय याद बन जाता है। एक मीठा शब्द, एक स्नेही मुस्कान या थोड़ा समय यह सब उनके लिए बेहद कीमती होता है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि माता-पिता हमारे जीवन का पहला पाठशाला हैं। उनके दूसरे में असीम शक्ति होती है। यदि हम आज उनकी सराहना करेंगे, तो कल हमारे बच्चे भी हमें वही सम्मान देंगे।

अंत में, यह सत्य हमेशा याद रखना चाहिए—दुनिया में सब कुछ बदल सकता है, लेकिन माता-पिता नहीं। इसलिए जब तक वे हमारे साथ हैं, उनकी सेवा करना, उनका सम्मान करना और उन्हें प्यार करना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। क्योंकि माता-पिता को फिर से नहीं खोजा जाना चाहिए

यादों की रंगभरी होली — सोयत के छोटे गांव से उठती बड़ी सीख

अजय कुमार बियानी

इंजीनियर और स्वतंत्र लेखक

फागुन का महीना आते ही मन के किसी कोने में बचपन की होली फिर से जीवित हो उठती है। आज जब रंगों का यह पर्व शहरों में औपचारिकता और शोर तक सिमटता दिखता है, तब स्मृतियों के पन्नों से मेरे छोटे से गांव सोयत की वह आत्मीय होली बार-बार सामने आ खड़ी होती है। सच तो यह है कि त्योहार केवल उत्सव का अवसर नहीं होते, वे हमारे सामाजिक और पारिवारिक संस्कारों के जीवंत विद्यालय भी होते हैं।

मेरे बचपन में होली केवल रंग खेलने का दिन नहीं होती थी, बल्कि पूरे गांव की सामूहिक आत्मा का उत्सव होती थी। फागुन लगते ही गांव के चौक-चौराहों पर हलचल बढ़ जाती थी। दादा-दादी की आंखों में चमक और माता-पिता की व्यस्तता यह बता देती थी कि रंगों का पर्व आने वाला है। घर की महिलाएं गुजिया, पापड़ी और खुरमा बनाने में जुट जातीं, तो बच्चे लकड़ियां इकट्ठी करने की होड़ में लगे रहते। उस समय न कोई कृत्रिमता थी, न दिखावा—सिर्फ अपनापन था।

सोयत के उस छोटे से गांव में होलिका दहन एक सामूहिक संस्कार की तरह होता था। पूरा गांव एक ही स्थान पर एकत्र होता, जगह को साफ कर गोबर से लीपा जाता और विधि-विधान से होलिका स्थापित की जाती। दादा जी हमें बताते थे कि यह केवल अग्नि प्रज्ज्वलन नहीं, बल्कि मन के विकारों को जलाने का प्रतीक है। जब होलिका जलती, तो हम बच्चे उसकी परिक्रमा करते हुए मन ही मन अपनी छोटी-छोटी इच्छाएं भी अग्नि को सौंप देते थे।

दूसरे दिन की होली तो जैसे रिश्तों का रंगमंच होती थी। सुबह होते ही पिता जी सबसे पहले बड़ों के चरण स्पर्श कर गुलाल लगाते और हमें भी यही संस्कार सिखाते। मां के आंचल की खुशबू में घुला गुलाल आज भी स्मृतियों में ताजा है। भाई-बहनों के साथ रंगों की नोक-झोंक, दोस्तों के साथ गलियों में दौड़-भाग और रिश्तेदारों का घर-घर आना—यह सब मिलकर होली को जीवंत बना देता था।

गांव की फाग मंडलियां देर रात तक ढोलक, झांझ और मंजीरों की थाप पर फाग गाती थीं। वह संगीत केवल कानों में नहीं, दिलों में उतरता था। देवर-भाभी की मर्यादित नोक-झोंक, बुजुर्गों की ठिठोली और बच्चों की खिलखिलाहट—इन सबके बीच होली सचमुच समरसता का पर्व बन जाती थी। किसी के मन में भय नहीं होता था कि कौन जबरन रंग डाल देगा या कोई असभ्यता करेगा। शालीनता ही उस उत्सव की असली पहचान थी।

समय बदला, जीवन की रफ्तार बढ़ी और त्योहारों का स्वरूप भी बदलने लगा। आज डीजे के तेज शोर में ढोलक की मधुर थाप दब गई है। प्राकृतिक रंगों की जगह रासायनिक रंगों ने ले ली है। पहले जो होली दिलों को जोड़ती थी, वह कई जगह केवल औपचारिकता या दिखावे का माध्यम बनती दिखाई देती है। पड़ोसी अब दरवाजे पर नहीं आते, संदेशों के माध्यम से शुभकामनाएं भेजकर कर्तव्य पूरा कर लिया जाता है।

यह परिवर्तन केवल परंपरा का नहीं, सामाजिक ताने-बाने का भी संकेत है। त्योहारों का उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य से जोड़ना था, लेकिन यदि वही उद्देश्य कमजोर पड़ने लगे तो आत्ममंथन आवश्यक हो जाता है। क्या हम अपनी नई पीढ़ी को वह आत्मीय होली दे पा रहे हैं, जो हमने अपने दादा-दादी और माता-पिता के साथ जी थी? क्या हमारे बच्चों के पास भी ऐसी स्मृतियां होंगी, जिन्हें वे वर्षों बाद उसी स्नेह से याद कर सकें?

सोयत के उस छोटे गांव की होली हमें यह सिखाती है कि त्योहारों की असली शक्ति सामूहिकता, शालीनता और प्रेम में निहित है। आधुनिकता का विरोध नहीं, बल्कि संतुलन आवश्यक है। तकनीक और सुविधा के इस युग में भी यदि हम रिश्तों की गर्माहट, बड़ों का सम्मान और बच्चों की निष्कपट खुशी बचा लें, तो होली की आत्मा सुरक्षित रह सकती है।

आवश्यक है कि हम फिर से अपने त्योहारों को उनके मूल स्वरूप से जोड़ें। प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करें, मर्यादित हास-परिहास को बढ़ावा दें और सबसे बढ़कर—अपने परिवार, मित्रों और पड़ोसियों के साथ समय बिताएं। जब तक होली दिलों को रंगती रहेगी, तब तक समाज में समरसता और सौहार्द के रंग फीके नहीं पड़ेंगे।

फागुन हर वर्ष आता है, रंग हर वर्ष उड़ते हैं, पर बचपन की वह होली बार-बार नहीं आती। इसलिए आइए संकल्प लें कि आने वाली पीढ़ियों को हम केवल रंगों का पर्व नहीं, बल्कि रिश्तों की वह रंगभरी विरासत सौंपें, जिसकी खुशबू जीवन भर बनी रहती है।

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन पंजीकृत द्वारा ई मेल भेज कर मुख्य समस्याओं के समाधान के लिए मांगा समय

पिंकी कुंडू सह संपादक

पत्र में परिवहन आयुक्त को संबोधित कर दिल्ली की जनता और व्यवसायिक वाहन मालिकों को परिवहन विभाग की नीतियों से आ रही ज्वलंत परेशानियों का समाधान करने हेतु बैठक कर निवारण का प्रस्ताव दिया। ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन का स्थल फैसला है की अगर मार्च माह में परिवहन आयुक्त द्वारा निम्नलिखित समस्याओं का नियम एवं कानून के अनुसार फैसला नहीं किया तो अप्रैल में माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत के समक्ष इस मुद्दे को प्रस्तुत करेगा। इसीलिए परिवहन आयुक्त से इन मुद्दों के हल के प्रति बैठक का समय मांगा गया है। आप सभी की जानकारी हेतु पत्र की कॉपी सलग्न,

माननीय दिल्ली परिवहन आयुक्त,

दिल्ली परिवहन विभाग,

5/9 अंडर हिल रोड, राजपुर रोड, दिल्ली

विषय: परिवहन क्षेत्र में जनता एवं व्यावसायिक वाहन मालिकों को आ रही समस्याओं के समाधान हेतु कीमती समय एवं बैठक आयोजित करने हेतु निवेदन

माननीय महोदया,

सविनय निवेदन है कि परिवहन क्षेत्र में जनता एवं व्यावसायिक वाहन मालिकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करने हेतु सभी संबंधित पक्षकारों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित करने की कृपा करें। यह बैठक परिवहन सेवाओं की सुगमता, सार्वजनिक सुरक्षा एवं व्यावसायिक हितों की रक्षा में सहायक सिद्ध होगी।

मुख्य मुद्दे निम्नलिखित हैं:

1. ई-वी 3-पहिया (6 सवारी क्षमता) वाहनों के व्यावसायिक गतिविधियों में पंजीकरण प्रक्रिया प्रारंभ करना: इन पर्यावरण अनुकूल वाहनों का व्यावसायिक उपयोग दिल्ली की यातायात व्यवस्था को मजबूत करेगा। वर्तमान में पंजीकरण की अनुपस्थिति से ऑपरेटरों को कठिनाई हो रही है।

2. दिल्ली में राजपत्रित अधिसूचना द्वारा पूर्व में संचालित परिवहन विभाग की विलय शाखाओं को पुनः खोलना: बिना पूर्व सूचना के शाखाओं का विलय होने से जनता एवं वाहन मालिकों को असुविधा हो रही है। राजपत्रित अधिसूचना के अनुपालन में इन्हें पुनः संचालित किया जाए ताकि स्थानीय स्तर पर सेवाएं सुगम हों।

3. दिल्ली में बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहनों के स्क्रैप डीलरों हेतु जनजोत पोर्टल को ध्यान में रखते हुए नियमावली बनाना एवं जोड़ना: वाहन स्क्रैपिंग नीति के अनुरूप बाहरी राज्यों के पंजीकृत वाहनों के लिए जनजोत पोर्टल का एकीकरण आवश्यक है। इससे स्क्रैप प्रक्रिया पारदर्शी एवं कुशल बनेगी।

4. दिल्ली में तकनीकी अधिकारियों के पदों पर कार्यरत गैर-तकनीकी अधिकारियों को हटाकर तकनीकी अधिकारियों की नियुक्ति: तकनीकी पदों पर गैर-तकनीकी अधिकारियों की तैनाती से वाहन निरीक्षण एवं अनुमोदन प्रक्रियाओं में विलंब हो रहा है। शीघ्र तकनीकी विशेषज्ञों की नियुक्ति सुनिश्चित की जाए।

उक्त मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हेतु शीघ्र बैठक आयोजित करने की कृपा करें। हम ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन पंजीकृत संगठन की ओर से पूर्ण सहयोग के लिए तत्पर हैं।

धन्यवाद।

भवदीय,
संजय कुमार बाठला
अध्यक्ष ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन [परिवहन नीति विश्लेषक]
09811732095,
9599232095
tolwadelhi@gmail.com
दिनांक: 04 मार्च 2026

आखिर इस्लामिक देशों के संगठन ने क्यों नहीं दिया ईरान का साथ?

कमलेश पांडेय/वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

लगभग साढ़े चार दर्जन इस्लामिक देशों के संगठन (OIC) के रहते हुए भी इजरायल व अमेरिका ने देश-दुनिया में शरिया प्रेरित इस्लामिक हुकूमत लाने को प्रतिबद्ध शिया मुल्क ईरान को जो खस्ताहाल बना दिए, वह दुनियावी देशों के लिए एक नसीहत के साथ-साथ कूटनीतिक चिंतन का भी विषय है। वहीं, ईरान ने भी इजरायल/अमेरिका और उनके कथित समर्थक विघ्नसन्तोषी ओआईसी के सदस्य देशों में स्थित अमेरिकी/यूरोपीय सैन्य अड्डों के ऊपर ताबड़तोड़ आक्रामक हमले करके यह जतला दिया कि अब्राहम परिवार और मुस्लिम समुदाय के भुलावे में वह नहीं पड़ने वाला!

उधर, चीन, उत्तर कोरिया और रूस का प्रत्यक्ष शह भी ईरान को ख़बर्बादख़ होने से यदि नहीं रोक पाए तो इसके मौलिक कारणों और कूटनीतिक वजहों को गहराई से पड़ताल करके एक एक कर समझने की जरूरत है, ताकि भविष्य की रणनीतिक गलतियों से चेता जा सके। इसलिए पहले यह समझने की कोशिश करते हैं कि आखिर इस्लामिक देशों के संगठन ने क्यों नहीं दिया ईरान का साथ? इसकी वजहें निम्नलिखित हैं-

पहला यह कि आखिर इस्लाम के झंडाबरदार समझे जाने वाले मुस्लिम देशों की पारस्परिक दुनिया में गहरी आंतरिक फूट क्यों है और उनके आपसी भू-राजनीतिक हित एक दूसरे के विरुद्ध क्यों हैं? क्या शिया-सुन्नी जैसा आंतरिक विभाजन इसकी प्रमुख वजह है, जहां ईरान (शिया बहुल) को सऊदी अरब जैसे सुन्नी देश क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वी मानते हैं। आखिर ईरान का हमास, हिजबुल्लाह और हूती जैसे आतंकी गुटों को समर्थन इन देशों के लिए खतरा क्यों पैदा करता है?

दूसरा यह कि क्या ओआईसी (OIC) जैसे मुस्लिम संगठन राजनीतिक व कूटनीतिक बयानबाजी तक ही सीमित रहते हैं, वो भी खासकर भारत और उसके एक केंद्र शासित प्रान्त जम्मू-कश्मीर के विषय में और उसके बाद पाकिस्तान, तुर्की ईरान और सऊदी अरब जैसे चार मजबूत खेमों में बंटे इस्लामिक सदस्य देशों के पारस्परिक हित काफी अलग-अलग हैं। वहीं, इतना भीतरी अंतर्विरोध रहने के बावजूद कभी वो यहूदियों के देश इजरायल को मिटाना चाहते हैं तो कभी हिंदुओं के देश इंडिया/भारत/हिन्दुस्तान को। ईसाई दुनिया से भी इनकी नफरत छिपी नहीं है। लेकिन अपने नापाक उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने जिस क्षद्म युद्ध आतंकवाद का रास्ता चुना, शायद वही अब उनके लिए घातक साबित हो रहा है।

तीसरा यह कि क्या इस्लाम परस्त शासन करने वाला देश ईरान इतना मजबूत हो गया था कि उससे इराक, सऊदी अरब, यूएई, ओमान, कतर, तुर्किये, पाकिस्तान, अफगानिस्तान जैसे कट्टर मुल्कों को खतरा महसूस हो रहा था और इसके लिए सबने खामोशी पूर्वक इजरायल-अमेरिका का साथ दे करके ईरानी धार्मिक तानाशाही खामनेई को निपटवा दिया और ईरान की बर्बादी का ऐसा रास्ता तैयार कर दिया, जो अब उनकी भी परेशानी का सबब बन चुका है।

चौथा यह कि अब्राहम परिवार की एकता यानी अमेरिका समर्थित यहुदी, ईसाई और मुस्लिम देशों की पारस्परिक एकता, जिसके बल पर वह चीन-भारत के बढ़ते वैश्विक कद को निरंतर कतरते रहने की मंशा रखता है, के झांसे में पड़कर सऊदी, यूएई (UAE), कतर, ओमान और जॉर्डन जैसे देशों ने इजरायल/अमेरिका को अपना हवाई क्षेत्र तक दे दिया, क्योंकि उन पर अंतर्राष्ट्रीय अमेरिकी दबाव पड़ा और उससे ये डरकर हिल गए। वहीं इस कूटनीतिक स्थिति का फायदा उठाकर इजरायल-अमेरिका ने अपने चिर शत्रु ईरान को तबाह कर दिया। कल तक जो ईरान पूरे विश्व में शरिया हुकूमत लाने के सपने पाले हुए था, आज वह अपना वजूद बचाने के लिए चीन-रूस की ओर कातर मेमने की तरह निहार रहा है?

पांचवां यह कि ईरान की परमाणु महत्वाकांक्षा और प्रॉक्सी युद्धनीति के तहत आतंकवादियों को शह देते रहने की नीति ने अरब और खाड़ी स्थित ईरान विरोधी मुस्लिम देशों को इतना भयभीत कर दिया कि उन्होंने ईरान की धृष्टबुद्धि से खुद को अलग कर दिया। यह ठीक है कि OIC ने ईरान पर इजरायली-अमेरिकी हमले की निंदा की, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। इससे ईरान अलग-थलग पड़ गया, जबकि फिलिस्तीन मुद्दे पर भी एकता नहीं बनी। वहीं, सऊदी जैसे देश अमेरिका से संबंध बचाने को प्राथमिकता देते हैं। जिसके चलते क्षेत्रीय प्रभाव ईरान के खिलाफ चला गया।

छठा यह कि इजरायल विरोधी पाकिस्तान और तुर्किये तक ने ईरान की हालिया संकट में प्रत्यक्ष सैन्य या मजबूत मदद इसलिए नहीं की क्योंकि उनके अपने रणनीतिक हित, आर्थिक दबाव और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धाएं प्राथमिकता रहीं। जहां पाकिस्तान ने ईरान पर बाहरी हमले की निंदा करने के साथ नैतिक समर्थन तो दिया, लेकिन सैन्य सहायता से इनकार कर दिया क्योंकि ईरान ने ऐसी कोई मांग ही नहीं की। जबकि उसके परमाणु कार्यक्रम में पहले से ही पाकिस्तान गुप्त मदद (ए.क्यू. खान नेटवर्क के जरिए) करते आया है। इसके बावजूद, पाकिस्तान अमेरिका और सऊदी से संबंध बचाने को प्राथमिकता देता है। भले ही ऐतिहासिक रूप से ईरान ने पाकिस्तान की मदद की, लेकिन अब शिया-सुन्नी विभाजन और अमेरिकी दबाव बाधक हैं। वहीं, तुर्किये के राष्ट्रपति एर्दोगन ने चुप्पी साधी क्योंकि उनका देश नाटो (NATO) सदस्य है और उसके लिए अमेरिका-यूरोप से आर्थिक-रणनीतिक संबंध महत्वपूर्ण हैं। जबकि ईरान से क्षेत्रीय नेतृत्व की प्रतिस्पर्धा भी रोकती है, जहां तुर्की खुद को इस्लामी दुनिया का केंद्र मानता है। हालांकि आर्थिक कमजोरी ने भी तुर्किये को जोखिम लेने से रोका। सपष्ट है कि मुस्लिम वर्ल्ड के दोनों देश ओआईसी (OIC) जैसे मंचों पर बयानबाजी तक सीमित रहे, लेकिन इजरायल-अमेरिका के खिलाफ एकजुट कार्रवाई करने से दूर रहे, जिससे ओआईसी में ईरान अधिक अलग-थलग हो गया।

सातवां यह कि सऊदी अरब और यूएई ने खुलकर ईरान का विरोध किया क्योंकि शिया-सुन्नी धार्मिक विभाजन, क्षेत्रीय वर्चस्व की होड़ और ईरान की आक्रामक नीतियां उनके लिए बड़ा खतरा बनी हुई हैं। उनके बीच गहरा धार्मिक और वैचारिक टकराव है। सऊदी अरब सुन्नी बहुल देश है और खुद को इस्लाम का केंद्र मानता है, जबकि ईरान शिया क्रांति के बाद से क्षेत्र में शिया प्रभाव फैला रहा है। 2016 में सऊदी द्वारा शिया धर्मगुरु निम्र अल-निम्र की फांसी के बाद संबंध पूरी तरह टूट गए। वहीं यूएई भी ईरान को प्रॉक्सी समूहों (हिजबुल्लाह, हूती) के जरिए अस्थिरता फैलाने वाला देश मानता है।

आठवां, इस्लामिक देशों की अपनी अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताएं हैं। अलबत्ता ईरान के परमाणु कार्यक्रम और यमन, सीरिया में हस्तक्षेप ने सऊदी-यूएई (UAE) को अमेरिका-इजरायल के साथ गठजोड़ करने को मजबूर किया। आलम यह रहा कि सऊदी क्राउन प्रिंस ने खुद ही ट्रंप से मिलकर ईरान विरोधी कार्रवाई को समर्थन दिया। जबकि यूएई ने अपने हवाई क्षेत्र का अप्रत्यक्ष उपयोग करने की इजाजत दी, ताकि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। चूंकि दोनों देश हर बात में अमेरिका से आर्थिक-सैन्य सहायता पर निर्भर हैं और ईरान को कमजोर करके खाड़ी में अपना प्रभुत्व बनाए रखना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने शतरंजी चाल ऐसी चली कि ईरान के मनबढ़ शासक उनकी जाल में फंसकर धुं-धू करके जल उठे। वहीं प्रतिक्रिया वश ईरान के जवाबी हमलों (जैसे अरामको रिफाइनरी) ने भी आपसी वैमनस्य बढ़ाया।

नवाँ यह कि शिया-सुन्नी संघर्ष ने ईरान को मध्य पूर्व में अलग-थलग कर दिया क्योंकि यह धार्मिक विभाजन क्षेत्रीय शक्ति संतुलन और भू-राजनीतिक हितों से गहराई से जुड़ गया। इसके ऐतिहासिक जड़ें को समझना जरूरी है, क्योंकि यह दरार पैगंबर मुहम्मद की मृत्यु (632 ई.) के बाद उत्तराधिकार विवाद से शुरू हुई, जहां सुन्नी बहुमत ने अबू बकर को चुना, लेकिन शिया अली (और उनके वंशजों) को अपना नेता मानते रहे। वहीं कर्बला (680 ई.) में इमाम हुसैन की शहादत ने इसे स्थायी जख्म बना दिया, जो ईरान की 1979 शिया क्रांति के बाद राजनीतिक हथियार बन गया। इनकी क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता भी बढ़ी, क्योंकि ईरान ने शिया-बहुल इराक, सीरिया, लेबनान (हिजबुल्लाह), यमन (हूती) में प्रॉक्सी नेटवर्क बनाया, जिसे सऊदी अरब जैसे सुन्नी शक्तियां क्षेत्रीय विस्तार मानती हैं। चूंकि सुन्नी देश (85-90% मुस्लिम आबादी) ईरान को इस्लामिक नेतृत्व का दावेदार नहीं मानते, जिससे ओआईसी (OIC) जैसे मंचों पर एकता टूटती है। इसका हालिया प्रभाव यह पड़ा कि इजरायल-अमेरिका हमलों (2026) में खामेनेई की मौत के बाद भी सऊदी, यूएई (UAE) ने चुप्पी साधी या अप्रत्यक्ष विरोध किया, क्योंकि ईरान के हमास-हूती समर्थन को वे अस्थिरता का कारण मानते हैं। इससे ईरान केवल शिया सहयोगियों तक सीमित रह गया।

व्यक्तित्व-पाठकों को समर्पित व्यंग्यकार-विवेक रंजन श्रीवास्तव

व्यंग्य का संक्रमण काल है या स्वर्ण काल? तय है कि व्यंग्य की चर्चा और व्यंग्य जितना लिखा जा रहा उससे ज्यादा पढ़ा जा रहा है। थोथा भ्रम है कि व्यंग्य पढ़ा नहीं जा रहा है, यदि ऐसा होता तो व्यंग्यकार कुछ भी लिखकर इतिश्री कर देते। जरा सी चूक व्यंग्यकार को थाना दर्शन करवा सकती है। जरूरी नहीं कि कबीर की तरह प्रहार किया जाए, प्रहार आप वरिष्ठ व्यंग्यकार विवेक रंजन श्रीवास्तव की तरह भी कर सकते हैं। सांप भी मर जाए और व्यंग्यकार भी बच जाए। व्यंग्य अगर पढ़ा नहीं जा रहा होता तो व्यंग्य का कालम अखबार की मजबूरी न बन जाता? अखबार 16 पेज का हो या चार पेज का उसमें व्यंग्य की मौजूदगी तय करती है कि उसकी आवश्यकता सम्पादकीय से कम नहीं है। पाठक अखबार पढ़ते समय पाठक हत्या, बलात्कार, राजनीति, युद्ध और प्रेम के अलावा कुछ ऐसा पढ़ना चाहता है जिससे, वह क्षणिक आनंद या भावविभोर हो सके।

विशेष बात आज व्यंग्यकाल में एक ऐसे व्यंग्यकार भी जो व्यंग्य को पढ़ने-पढ़ाने के लिए समर्पित है। विवेक रंजन श्रीवास्तव स्वांत सुखाय के साथ-साथ पाठकों को पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ऐसे कितने साहित्यकार हैं जो अपनी लाइब्रेरी आम आदमी के लिए खोलकर बैठे हैं? यह कोई नहीं जानना चाहता कि किताब को कितना पढ़ा, कितने फोन आए, कितने मेसेज आए? किसी संस्था को पुस्तकें भेंट कर देना अलग बात है, लेकिन पुस्तक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना उससे भी श्रेष्ठ कार्य है।

जबलपुर की भूमि आधुनिक व्यंग्य की कर्मभूमि कही जा सकती है। वैसे तो मध्य प्रदेश व्यंग्य की भूमि है, जहां व्यंग्यकारों की उपज बिना खाद-पानी के होती है। इलाका कोई सा भी हो। छोटे से छोटे गांव में दमदार व्यंग्यकार दिखाई दे जाएंगे। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि हर व्यंग्यकार को जमीन नहीं मिलती, मंच नहीं मिलता, माइक नहीं मिलता, लेकिन वह पूरी तन्मयता से व्यंग्य उगाने में लगा रहता है। विवेक रंजन श्री वास्तव को जमीन, माइक और मंच भी मिला। लेखन में निस्वार्थ भाव से लगे रहे हैं। खासियत है-व्यंग्य पढ़ना और उसके बारे में अखबारों में सटीक समीक्षा के माध्यम से उस पुस्तक को पढ़ने के लिए प्रेरित करना, व्यंग्य समारोह में शिरकत करना अपनी बात रखना और व्यंग्य के क्षेत्र में पदार्पण कर रहे व्यंग्यकारों को मुफीद जमीन दिखाना, वे कर्तव्य मान सक्रिय अवदान के लिए सदैव तत्पर रहते आए हैं।

विवेक रंजन केवल व्यंग्य के लिए काम करते हैं? व्यंग्य के पाठकों के लिए काम करते हैं, इसके लिए उन्होंने अपने घर पर डिब्बा लाइब्रेरी का संयोजन कर रखा है। पुस्तक उठाओ, घर ले जाओ, पढ़ो और फिर उसी बॉक्स में रख दो। कोई इंट्री नहीं, कोई खतोकिताबत नहीं बस केवल समर्पण ही समर्पण। समीक्षा के लिए यह जरूरी नहीं कि उन्हें दो प्रतियां दी जाएं? उसके बाद ही उस कृति पर कलम दौड़ायेंगे। स्वयं किताबें खरीदकर गुणवत्ता और लेखक के कर्म को विस्तार से रुचिकर बनाते हुए प्रस्तुत करने की कला में माहिर है। यही कारण है कि उनके पाठक दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं यानी उनके माध्यम से व्यंग्य के पाठकों की वृद्धि दिन पर दिन हो रही है। इस महती कार्य के लिए व्यंग्य जगत निश्चित रूप से उनका ऋणी है। एक चैनल से ज्यादा वे व्यंग्य पाठक तैयार कर रहे हैं, व्यंग्य के पाठक।

वर्तमान परिवेश में अपनी पुस्तक तो हर कोई पढ़वाना चाहता है, लेकिन स्वयं दूसरे की पुस्तक पढ़कर दो शब्द लिखने की जहमत उठाना पसंद नहीं करता। पुस्तक पसंद आती तो संदर्भ के लिए लाइब्रेरी में सहेज कर रख लेता है। सार्वजनिक रूप से प्रशंसा करने में कोताही बरतता है। वहीं विवेक जी इस कार्य में दक्षता के साथ सारे जहां में उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करते दिखाई देते हैं।

विवेक जी केवल व्यंग्य पुस्तकों की बात नहीं करते, वे व्यंग्य आलोचना पर भी सिद्धहस्त हकदार माने जाते हैं। इस पुस्तक मेले (2026) व्यंग्य आलोचना पर श्री राहुल देव की पुस्तक आना थी, आई, डॉ0 अतुल चतुर्वेदी की पुस्तक आना थी, लेकिन नहीं आ पाई। आ0 श्री सुभाष चन्दर की आलोचना पर पुस्तक आना थी, वह भी नहीं आई। डॉ0 संजीव कुमार की व्यंग्य आलोचना पर कई पुस्तकें आईं, जिसमें व्यंग्य का इतिहास भी शामिल है-यह पुस्तक तो पढ़ने के बाद ही बता पाएगी कि श्री सुभाष चन्दर के लिखे व्यंग्य साहित्य से इतिहास कितना आगे या फिर.....?

बात विवेक रंजन श्रीवास्तव की- आलोचना पर आई पुस्तक ''व्यंग्यः कल, आज और कल।'' व्यंग्य के वर्तमान परिदृश्य के अलावा व्यंग्य के अन्य पहलुओं पर चर्चा प्रस्तुत करती है। व्यंग्य को वर्तमान की धरोहर मानने वालों को चुनौती पेश करती है कि व्यंग्य कल भी था आज भी और कल भी रहेगा। बिना उदाहरण के पुस्तक पर बात करना समझदारी नहीं है।

लखन कहा सुनु भृगकुल भूषण।
भट भटेश भय बिभूषण।।
कोटिन कोटि कपि केसरी नंदन।
समर भांति करिहहिं समंदन।।''
बालकाण्ड

तीखा व्यंग्य जो लक्ष्मण द्वारा कहा गया। महाभारत काल की बात अक्सर व्यंग्यकार करते पाए जाते हैं, लेकिन इस प्रकार का उदाहरण कदाचित ही प्राप्त होता है। विवेक जी कबीर काल की बात करते हैं, नरेन्द्र कोहली की बात करते हैं। भला परसाई और जोशी के बिना हिन्दी व्यंग्य की कल्पना कैसे की जा सकती है। एक बात अवश्य विचारणीय है कि यह पुस्तक व्यंग्य पाठकों के लिए किसी हीरे से कम नहीं है। व्यंग्यकार, व्यंग्यकारों की बात करते हैं, लेकिन विवेक जी ने नागार्जुन के कवित्त में जो व्यंग्य बसा हुआ है उस पर चर्चा करके अचंभित कर दिया है। कविता में व्यंग्य की चर्चा कम ही पाई जाती है।

कुत्ता बैठा कार में, मानव मांगे भीख।
मिस्टर दुर्जन दे रहे, सज्जनमल को सीख।।

विवेक जी व्यंग्य साहित्य में महिला हस्तक्षेप को विस्तार से देखते हैं। आज जिस प्रकार महिलाओं का व्यंग्य क्षेत्र में जबरदस्त पदार्पण देखा जा रहा है, वह व्यंग्य के लिए सुखद पहलु है। नारी दृष्टि की अवलोकन क्षमता मात्र पुरूष पर न हो कर आसपास की विसंगतियों की सूक्ष्म पड़ताल तक जा पहंचती है।

यह तो तय है हिन्दी नाटक में व्यंग्य की वह प्रखर अनुभूति नहीं मिलती जो मराठी नाट्य संसार में देखने को आसानी से मिल जाती है। यह दीगर बात है कि मराठी नाटकों में अधिकांशतः फार्स के माध्यम से बात कही जाती है। बहरहाल हिन्दी नाटकों में व्याप्त व्यंग्य के कुछ चर्चित नामों का भी उल्लेख है।

विवेक रंजन श्रीवास्तव वरिष्ठ व्यंग्यकार होने के साथ-साथ व्यंग्य पाठको को समर्पित करने वाले एक मात्र व्यक्ति हैं। जो व्यंग्य लिखने से लेकर पाठकों तक पहुंचाने तक का श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं।

सुनील जैन राही

प्रधानमंत्री मोदी की हालिया इज़राइल यात्रा भारत की कूटनीतिक संतुलन, निरंतरता एवं आत्मविश्वास का परिचायक

गौतम चौधरी

विगत दिनों 25 व 26 फ़रवरी 2026 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दो दिवसीय आधिकारिक इज़राइल यात्रा, जो 2017 की ऐतिहासिक यात्रा के बाद उनकी दूसरी यात्रा थी, भारत की पश्चिम एशिया नीति में किसी बड़े बदलाव के बजाय निरंतरता को दर्शाती है। यह यात्रा एक परिपक्व होती साझेदारी में भारत के आत्मविश्वास को प्रदर्शित करता है। साथ ही रणनीतिक स्वायत्तता, संतुलित कूटनीति एवं राष्ट्रीय हित आधारित विदेश नीति के स्थायी सिद्धांतों को भी रेखांकित करता है।

पश्चिम एशिया के प्रति भारत की विदेश नीति ऐतिहासिक रूप से व्यावहारिक और बहु-दिशात्मक रही है। प्रतिस्पर्धी क्षेत्रीय गुटों के साथ कठोर रूप से जुड़ने के बजाय, नई दिल्ली ने इज़राइल, अरब देशों और ईरान, सभी के साथ समानांतर संबंध बनाए रखे हैं। इन संबंधों का आधार ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, प्रवासी भारतीयों का कल्याण, आतंकवाद-रोधी सहयोग और तकनीकी साझेदारी जैसे व्यावहारिक हित रहे हैं। क्षेत्र की जटिल परिस्थितियों ने संतुलित और सूक्ष्म कूटनीति की मांग की है, और भारत ने हमेशा शून्य-योग (zero-sum) दृष्टिकोण से बचने की कोशिश की है।

बता दें कि भारत-इज़राइल संबंधों की नींव 1992 में पड़ी। इससे पहले भारत और इजरायल के बीच द्विपक्षीय संबंधों का अभाव था। पहली बार कांग्रेस के नेतृत्व वाली नरसिंहाराव की सरकार ने इजरायल के साथ पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित किए। इसके बाद विभिन्न सरकारों के दौरान सहयोग लगातार बढ़ता गया, जो द्विपक्षीय निरंतरता को दर्शाता है। इज़राइल भारत का एक महत्वपूर्ण रक्षा साझेदार बनकर उभरा है। इजरायल के साथ व्यापारिक संबंधों का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है। अब तो कृषि, जल प्रबंधन, साइबर सुरक्षा, नवाचार और उन्नत तकनीक के क्षेत्रों में भी द्विपक्षीय सहयोग का विस्तार हुआ है। यह साझेदारी अचानक बदलाव का परिणाम नहीं बल्कि साझा रणनीतिक हितों के आधार पर धीरे-धीरे विकसित हुई है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने इज़राइल के साथ संबंधों को फ़लिस्तीन मुद्दे से प्रभावी रूप से "डी-हाइफ़नेट" किया। इसका अर्थ है कि इज़राइल के साथ संबंधों को उसके अपने रणनीतिक महत्व के आधार पर आगे बढ़ाना, बिना उन्हें केवल फ़लिस्तीन के संदर्भ में सीमित किए। साथ ही, भारत ने दो-राष्ट्र समाधान के समर्थन की अपनी पारंपरिक नीति को बरकरार रखा है और फ़लिस्तीनी नेतृत्व के साथ राजनयिक संपर्क जारी रखा है, जो संतुलित कूटनीति को दर्शाता है।

यह यात्रा ऐसे समय हुई जब क्षेत्रीय परिस्थितियाँ अस्थिर थीं-गाज़ा युद्धविराम के बाद तनाव, अमेरिका-ईरान संबंधों में खींचतान और बदलते भू-राजनीतिक समीकरण, साफ तौर पर दिख रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी की इज़राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और राष्ट्रपति इसाक हर्ज़ोग से मुलाकात तथा केनेसट में उनका संबोधन रक्षा सहयोग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्टार्टअप, कनेक्टिविटी, शिक्षा और नवाचार पर केंद्रित रहा। संसद में मिले सम्मान और सांस्कृतिक प्रतीकों ने यह दिखाया कि द्विपक्षीय संबंध अब केवल रक्षा सौदों तक सीमित नहीं, बल्कि व्यापक रणनीतिक और सामाजिक साझेदारी में बदल चुके हैं।

कुछ आलोचकों ने इज़राइल की हालिया कार्रवाइयों पर वैश्विक आलोचना के बीच यात्रा के समय पर सवाल उठाए हैं। हालांकि, भारत की कूटनीति यह दर्शाती है कि वह एक साथ कई साझेदारियों को संतुलित रूप से संभालने में सक्षम है। इज़राइल के साथ संबंध मजबूत करने से खाड़ी देशों-जैसे यूएई और सऊदी अरब-के साथ भारत के संबंध कमजोर नहीं हुए हैं। ऊर्जा सहयोग, व्यापार विस्तार और पश्चिम एशिया में बसे विशाल भारतीय प्रवासी समुदाय भारत की क्षेत्रीय नीति के महत्वपूर्ण स्तंभ बने हुए हैं।

भारत की इस नीति को बहु-वेक्टर कूटनीति कहा जा सकता है-जहाँ सभी प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियों के साथ संबंध बनाए जाते हैं, जबकि किसी एक के साथ विशेष प्रगाढ़ता से बचा जाता है। हाल के वर्षों में कई अरब देशों और इज़राइल के बीच बढ़ती खुली सहभागिता ने भी भारत के लिए इस संतुलित नीति को बनाए रखना आसान बनाया है।

सच तो यह है कि प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा बदलाव नहीं बल्कि निरंतरता का प्रतीक है। भारत की पश्चिम एशिया नीति समय के साथ अधिक खुली और आत्मविश्वासी अवश्य हुई है, लेकिन उसके मूल सिद्धांत-रणनीतिक स्वायत्तता, व्यावहारिक यथार्थवाद और संतुलित सहभागिता-अपरिवर्तित रहे हैं। यह यात्रा दर्शाती है कि भारत जटिल क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धाओं के बीच संतुलन बनाए रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों को खुले रूप से आगे बढ़ाने में सक्षम है। बदलते वैश्विक गठबंधनों और अनिश्चितताओं के दौर में, यही निरंतरता भारत की कूटनीतिक शक्ति बनकर उभरती है।

भारत व कनाडा के बीच हुए व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते के द्विपक्षीय निहितार्थ

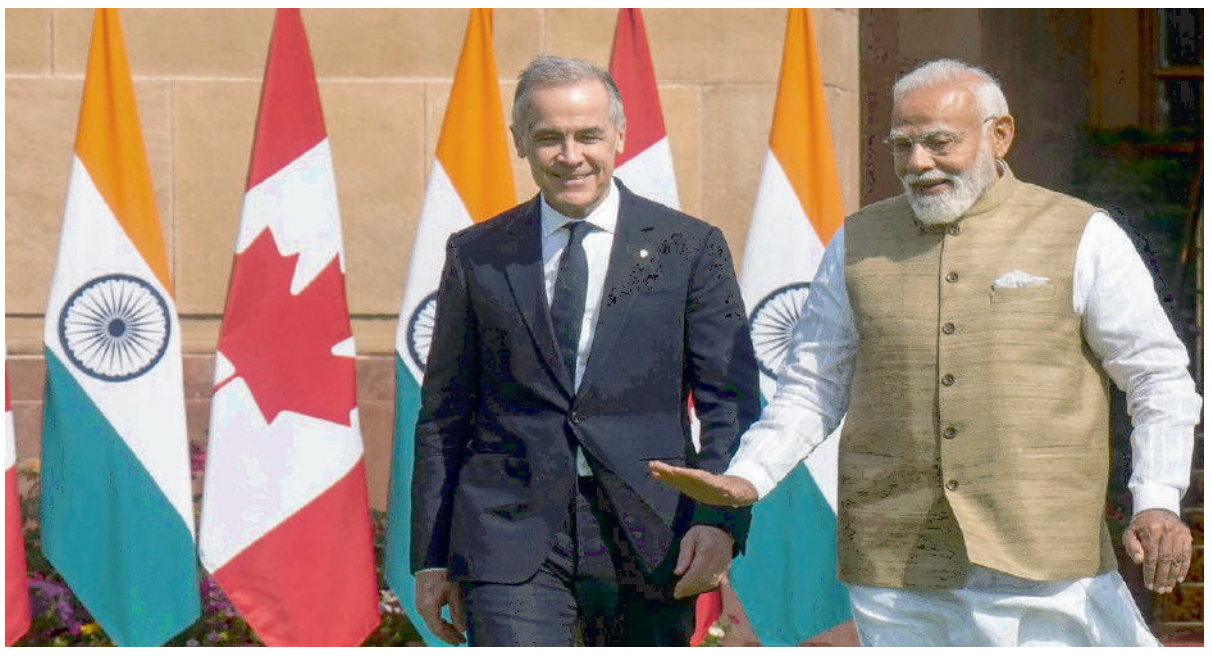

कमलेश पांडेय/वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

आधुनिक विश्व के देश एक दूसरे के ऊपर पर बहुत हद तक आश्रित रहते हैं। इसलिए परस्पर मधुर सम्बन्ध कायम रखना चाहते हैं। यदि कभी कभार कोई मतभेद उतपन्न हो भी जाए तो उसे जल्द निपटाना ही उनकी प्राथमिकताओं में शुमार होता है। भारत और कनाडा ने भी यही किया। समय व परिस्थितियों वश उपजी हुई नेतृत्व गत वैचारिक खाई को शीघ्र ही पाट लिया और भरोसेमंद रिश्ते कायम करते हुए गत 2 मार्च, दिन सोमवार को व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (CEPA) किए। इसके संदर्भ शर्तों (TOR) पर जो हस्ताक्षर हुए, वो एक ऐतिहासिक कदम है, जो द्विपक्षीय व्यापार को 2030 तक 50 अरब डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य रखता है। इससे दोनों देशों को भरपूर फायदा मिलेगा।

जिस तरह से भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई में पीएम नरेंद्र मोदी और मार्क कार्नी की अहम मौजूदगी में वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल व मनिंदर सिद्धू ने दस्तावेज आदान-प्रदान किए, उनका अपना महत्व है और यह कदम साल 2023 के चरम तनाव के बाद आपसी संबंधों की पुनःबहाली को दर्शाता है। इसलिए इसके आर्थिक और कूटनीतिक मायने भी खास हैं। सबसे पहले हम इसके प्रमुख प्रावधान पर बात करते हैं, जो निम्नलिखित हैं:-

पहला, पारस्परिक व्यापार लक्ष्यः वर्तमान 10 अरब डॉलर से दोगुना से अधिक बढ़ाकर 50 अरब डॉलर किये जाने का लक्ष्य तय किया गया है, जिसमें कृषि, आईटी, फार्मा और इंजीनियरिंग गुड्स पर फोकस रहेगा।

दूसरा, द्विपक्षीय रणनीतिक क्षेत्रः क्रिटिकल मिनरल्स (लिथियम, कोबाल्ट), स्वच्छ ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन, एआई, क्वांटम और रक्षा सहयोग द्विपक्षीय रणनीति में शामिल होंगे। इससे अमेरिका और चीन पर या उनके समर्थक देशों पर भारत-कनाडा की निर्भरता घटेगी। इसका मनोवैज्ञानिक लाभ भी उन्हें मिलेगा।

तीसरा, अन्य सहमति पत्रकों (MoU) पर निर्णय : संयुक्त पल्स प्रोटीन सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, भारत-कनाडा-ऑस्ट्रेलिया तकनीकी साझेदारी जैसे अन्य अहम क्षेत्रों में भी द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग बढ़ाने के निर्णय हुए।

लिहाजा, इन समझौतों के आर्थिक व कूटनीतिक मायने स्पष्ट हैं। देखा जाए यह समझौता भारत की ऊर्जा सुरक्षा मजबूत करेगा, खासकर 2.6 अरब डॉलर के यूरेनियम डील से, जो परमाणु ऊर्जा विनियामकता पर भरोसे को रेखांकित करता है। जबकि कनाडा के लिए अमेरिका-चीन व्यापार दबावों के बीच भारत विविधीकरण का द्वार खोलेगा, वहीं भारत को भी इंडो-पैसिफिक में नया व्यापारिक साझेदार मिलेगा। कुल मिलाकर, यह खालिस्तानी मुद्दे की ज्वलनशीलता के बाद आपसी विश्वास बहाली का प्रतीक है, जो वैश्विक भू-राजनीति में दोनों की स्थिति सुधारेगा।

इनमें सबसे महत्वपूर्ण भारत-कनाडा यूरेनियम समझौता है जो कैमेको कंपनी के साथ 2.6 अरब डॉलर का दीर्घकालिक सौदा हुआ, वह भारत की ऊर्जा सुरक्षा को कई स्तरों पर मजबूत करेगा, खासकर परमाणु ऊर्जा पर निर्भरता बढ़ाने के बीच। बताया जाता है कि यह 2027-2035 तक 2.2 करोड़ पाउंड यूरेनियम की आपूर्ति सुनिश्चित करेगा, जो ईंधन की कमी से बचाएगा। इससे ईंधन आपूर्ति में स्थिरता आएगी। इससे भारत के 24 परमाणु रिएक्टरों (जैसे तारापुर, काकरापार) को लगातार यूरेनियम मिलेगा, जो कोयला-आधारित बिजली पर निर्भरता घटाएगा। दरअसल, वर्तमान में आयात पर निर्भरता (रूस, कजाकिस्तान से) के कारण जो उतार-चढ़ाव रहता है; उससे यह डील विविधीकरण लाएगी। जहां तक क्षमता विस्तार की बात है तो 2047 तक परमाणु क्षमता 100 गीगावाट करने के लक्ष्य में सहायक बनेगा; फलस्वरूप वर्तमान 8.8 गीगावाट से 12 गुना वृद्धि संभव होगी। वहीं स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्य (2070 तक नेट जीरो) में परमाणु का 5% योगदान बढ़ेगा, और बेसलोड पावर (24x7 बिजली) सुनिश्चित करेगा।

इसके रणनीतिक लाभ भी होंगे। जिस प्रकार से कूटनीतिक तनाव के बाद भरोसा बहाल हुआ है; उससे कनाडा (विश्व का दूसरा बड़ा उत्पादक) से आपूर्ति वैश्विक चेन में स्थिरता देगी। साथ ही निजी क्षेत्र को खनन-अयात की अनुमति के साथ यह आत्मनिर्भरता को गति देगा। इससे साफ है कि

भारत और कनाडा के बीच हालिया वर्षों में आई खटास के बाद अब द्विपक्षीय समझदारी बढ़ रही है, जो 2025 से शुरू हुए कूटनीतिक प्रयासों का परिणाम है। यह सुधार मुख्य रूप से कनाडा में नेतृत्व परिवर्तन (जस्टिन ट्रूडो के बाद मार्क कार्नी का सत्ता में आना) और खालिस्तानी मुद्दे पर व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने से हुआ है।

जहां तक हालिया विकास की बात है तो 2025 में G7 और G20 शिखर सम्मेलनों में पीएम मोदी और कार्नी की बैठकों ने नई रूपरेखा तैयार की, जिसमें उच्चायुक्तों की बहाली और सुरक्षा सहयोग शामिल है। वहीं, फरवरी 2026 में एनएसए अजीत डोवाल की ओटावा यात्रा ने राष्ट्रीय सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और कानून प्रवर्तन पर कार्ययोजना बनाई। जबकि मार्च 2026 में कार्नी की भारत यात्रा के दौरान यूरेनियम डील, आर्थिक साझेदारी समझौता (2026 अंत तक) और क्रिटिकल मिनरल्स पर सहमति बनी।

जहां तक कूटनीतिक महत्व की बात है तो यह समझदारी खालिस्तानी अलगाववाद जैसे संवेदनशील मुद्दों पर विश्वास बहाली का संकेत देती है, जहां कनाडा अब भारत को 'सुरक्षा खतरा' नहीं मान रहा। आर्थिक रूप से, व्यापार को 2030 तक दोगुना करने, स्वच्छ ऊर्जा, एआई और रक्षा सहयोग से दोनों देशों को लाभ होगा, खासकर वैश्विक भू-राजनीतिक तनावों (जैसे ईरान संकट) में। भारत के लिए यह इंडो-पैसिफिक रणनीति मजबूत करेगा, जबकि कनाडा अमेरिका-चीन व्यापार दबाव से विविधीकरण पाएगा।

देखा जाए तो खालिस्तान मुद्दा भारत-कनाडा संबंधों में 2023 से प्रमुख बाधा बना, जब कनाडाई पीएम जस्टिन ट्रूडो ने हरदीप सिंह निज्जर (खालिस्तानी कार्यकर्ता) की हत्या में भारत पर आरोप लगाए। इससे उच्चायोगों में कम कर्मचारी, व्यापार वार्ता रुकना और कूटनीतिक तनाव बढ़ा, क्योंकि भारत ने कनाडा को खालिस्तानी चरमपंथियों को पनाह देने का दोषी ठहराया। जहां तक इन बाधा के कारण की बात है तो निज्जर (जिसे भारत आतंकी मानता था) की जून 2023 में ब्रिटिश कोलंबिया में हत्या के बाद ट्रूडो ने संसद में भारतीय एजेंटों का उल्लेख किया, जिसे भारत ने खारिज किया। कनाडा में खालिस्तानी समूहों (जैसे SFJ) को 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' के नाम पर संरक्षण मिला, जिससे भारत ने डोजियर भेजे लेकिन कार्रवाई न होने से तनाव बढ़ा। इससे राजनयिकों पर हमले, व्यापार सौदे रद्द और सुरक्षा सहयोग ठप हो गया।

जहां तक वर्तमान समाधान की बात है तो 2025 में मार्क कार्नी के पीएम बनने के बाद संबंध रीसेट हुए; जून 2025 में उच्चायोग बहाल हुए। एनएसए अजीत डोभाल की यात्राओं के बाद खालिस्तानी इंदरजीत सिंह गोसल (गुरपतवंत पन्नू का सहयोगी) की सितंबर 2025 गिरफ्तारी हुई। फरवरी-मार्च 2026 में मोदी-कार्नी वार्ताओं में खालिस्तान को 'आतंकवाद और संगठित अपराध' मानने पर सहमति बनी, न कि अभिव्यक्ति। अब खुफिया साझा, प्रत्यर्पण और सुरक्षा सहयोग बढ़ा है।

एनएसए अजीत डोभाल और उनकी कनाडाई समकक्ष नताली ड्रोइन की फरवरी 2026 में ओटावा बैठक ने राष्ट्रीय सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने पर प्रमुख सहमति बनाई। यह द्विपक्षीय सुरक्षा संवाद का हिस्सा था, जो निज्जर हत्या विवाद के बाद संबंधों को रीसेट करने का कदम साबित हुआ। जहां तक प्रमुख सहमति बिंदु की बात है तो राष्ट्रीय सुरक्षा और कानून प्रवर्तन पर साझा कार्य योजना तैयार करना, जिसमें व्यावहारिक सहयोग शामिल है। दोनों देशों में सुरक्षा एवं कानून प्रवर्तन संपर्क अधिकारी नियुक्त करना, ताकि एजेंसियां कामकाजी संबंध मजबूत करें। वहीं ड्रग तस्करी, अंतरराष्ट्रीय अपराधी नेटवर्क और साइबर सुरक्षा पर सूचना साझा करना भी शामिल है। यह बैठक ड्रोइन की सितंबर 2025 भारत यात्रा की प्रगति पर आधारित थी, जहां गैर-हस्तक्षेप और सूचना आदान-प्रदान पर सहमति हुई थी। इससे कनाडाई पीएम मार्क कार्नी की मार्च 2026 भारत यात्रा का मार्ग प्रशस्त हुआ, जो आर्थिक साझेदारी को बढ़ावा देगा।(युवराज फीचर्स)

कमलेश पांडेय/वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

ऊर्जा दक्षता अपनाएँ, सतत विकास की राह बनाएँ (5 मार्च विश्व ऊर्जा दक्षता दिवस विशेष आलेख)

-सुनील कुमार महला

5 मार्च को 'विश्व ऊर्जा दक्षता दिवस' मनाया जाता है। वास्तव में,इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य ऊर्जा के विवेकपूर्ण उपयोग और ऊर्जा संरक्षण के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना है। ऊर्जा दक्षता का अर्थ है-कम ऊर्जा में अधिक कार्य करना। अर्थात सीधे शब्दों में कहें तो बिजली, पेट्रोलियम, गैस जैसे संसाधनों का सीमित और समझदारीपूर्ण उपयोग कर बेहतर परिणाम प्राप्त करना। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज बढ़ती जनसंख्या, तीव्र औद्योगीकरण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बीच ऊर्जा दक्षता वैश्विक प्राथमिकता बन चुकी है।

यह भी उल्लेखनीय है कि 'विश्व ऊर्जा संरक्षण दिवस' प्रत्येक वर्ष 14 दिसंबर को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य ऊर्जा बचत और उसके सतत उपयोग के महत्व को रेखांकित करना है। विश्व की लगातार बढ़ती जनसंख्या के बीच वर्तमान समय में ऊर्जा संकट एक गंभीर विषय है। आज विकासशील देशों में ऊर्जा की मांग निरंतर बढ़ रही है, जबकि कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे पारंपरिक संसाधन बहुत ही सीमित हैं। इनका अत्यधिक उपयोग कार्बन उत्सर्जन (ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन) को बढ़ाता है, जो ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण है। इसलिए ऊर्जा का तर्कसंगत उपयोग आज की महती आवश्यकता है।

यहां पाठकों को बताता चलूं कि विश्व ऊर्जा दक्षता दिवस की शुरुआत वर्ष 1998 में ऑस्ट्रिया में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन से मानी जाती है, जहां ऊर्जा संकट और उसके समाधान पर वैश्विक स्तर पर चर्चा हुई। इसके बाद 5 मार्च को ऊर्जा दक्षता के प्रति जागरूकता दिवस के रूप में मनाने की परंपरा शुरू हुई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने में अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी संस्था ने ऊर्जा दक्षता को 'पहला ईंधन' कहा है, क्योंकि यह वह ऊर्जा है जिसे उत्पन्न करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। यानी बचाई गई ऊर्जा ही सबसे सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा है।

हाल के वर्षों में इस दिवस की थीम ऊर्जा संक्रमण, नेट-ज़ीरो उत्सर्जन तथा स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा जैसे विषयों पर केंद्रित रही है। कॉन्फ्रेंस ऑफ द पार्टीज-28 (कॉप 28) में वैश्विक स्तर पर यह संकल्प लिया गया कि 2030 तक ऊर्जा दक्षता सुधार की वार्षिक दर को 4% तक पहुंचाया जाएगा।

यदि वैश्विक स्तर पर उद्योग अपनी ऊर्जा दक्षता में केवल 20% सुधार कर लें, तो वैश्विक अर्थव्यवस्था में खरबों डॉलर की बचत संभव है। ऊर्जा दक्षता में निवेश पारंपरिक ऊर्जा उत्पादन की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक रोजगार उत्पन्न करता है। 'नेगावाट' यानी बचाई गई बिजली की अवधारणा आज जलवायु परिवर्तन से लड़ने का प्रभावी और किफायती साधन बन चुकी है। इससे उपभोक्ताओं के बिजली बिल में 20–30% तक की कमी संभव है।

भारत के संदर्भ में देखें तो देश विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है। तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और जनसंख्या के कारण ऊर्जा की मांग में वृद्धि हो रही है, फिर भी भारत ने ऊर्जा तीव्रता (प्रति इकाई जीडीपी पर ऊर्जा खपत) कम करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। भारत ने 2030 तक अपनी जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता में उल्लेखनीय कमी लाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

भारत की स्थापित बिजली क्षमता 500 गीगावाट (जीडब्लयू) से अधिक हो चुकी है, जिसमें लगभग 51% हिस्सा गैर-जीवाश्म स्रोतों से आता है। ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने में ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके 'स्टार रेटिंग' कार्यक्रम ने हज़ारों करोड़ यूनिट बिजली और अरबों रुपये की बचत की है।

एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड द्वारा संचालित 'उजाला योजना' विश्व का सबसे बड़ा घरेलू एलईडी वितरण कार्यक्रम है, जिसके अंतर्गत लगभग 37 करोड़ एलईडी बल्ब वितरित किए गए हैं। इससे हर वर्ष अरबों यूनिट बिजली की बचत और लाखों टन कार्बन उत्सर्जन में कमी आई है। इसी प्रकार 'परफॉर्म, अचीव एंड ट्रेड' (पीएटी) योजना उद्योगों के लिए एक प्रभावी ऊर्जा दक्षता मॉडल सिद्ध हुई है।

ऊर्जा दक्षता प्राप्त करने के लिए घरेलू, औद्योगिक और परिवहन क्षेत्रों में ठोस कदम आवश्यक हैं। घरों में एलईडी बल्ब और 5-स्टार रेटिंग वाले उपकरणों का उपयोग, अनावश्यक विद्युत उपकरणों को बंद रखना तथा प्राकृतिक रोशनी का अधिक प्रयोग करना उपयोगी उपाय हैं। उद्योगों में ऊर्जा ऑडिट, आधुनिक मशीनों का उपयोग और अपशिष्ट ऊष्मा का पुनः उपयोग ऊर्जा बचत में सहायक है। परिवहन क्षेत्र में सार्वजनिक साधनों और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना भी प्रभावी कदम है।

विश्व स्तर पर ऊर्जा दक्षता को सतत विकास और जलवायु परिवर्तन से निपटने का प्रमुख साधन माना जा रहा है। विकसित देश उन्नत तकनीक, सख्त मानकों और नवीकरणीय ऊर्जा के बढ़ते उपयोग के माध्यम से ऊर्जा तीव्रता को लगातार कम कर रहे हैं। हालांकि भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी तकनीकी उन्नयन, निवेश और जन-जागरूकता के क्षेत्र में और अधिक प्रयास अपेक्षित हैं। अंततः कहा जा सकता है कि ऊर्जा दक्षता केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम ही नहीं, बल्कि आर्थिक सुदृढ़ता का भी आधार है। यदि हम ऊर्जा का संतुलित और जिम्मेदार उपयोग करें, तो न केवल संसाधनों की रक्षा कर सकते हैं, बल्कि स्वच्छ, टिकाऊ और समृद्ध भविष्य की नींव भी रख सकते हैं।

होला मोहल्ला के अवसर पर शहीद बाबा हिम्मत सिंह जी खालसा वेलफेयर सोसाइटी द्वारा दूध का लंगर आयोजित

अमृतसर, 4 मार्च (साहिल बेरी)

पावन पर्व होला मोहल्ला के अवसर पर शहीद बाबा हिम्मत सिंह जी खालसा वेलफेयर सोसाइटी द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्रद्धा और भक्ति भावना के साथ दूध का लंगर लगाया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के निवासियों और संगतों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर लंगर का प्रसाद ग्रहण किया।

सोसाइटी के चेयरमैन कुंदन सिंह कोट खालसा ने जानकारी देते हुए बताया कि होला मोहल्ला के उपलक्ष्य में यह सेवा प्रति वर्ष निरंतर जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि सामाजिक और धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना प्रत्येक सिख का कर्तव्य है।

इस मौके पर प्रधान मनजीत सिंह जी, गुरदेव सिंह झल्लक, कुलदीप सिंह जम्मू, , दविंदर सिंह फतेहपुर, सुखदेव सिंह (सीनियर वाइस प्रेसीडेंट), हरजीत सिंह (जनरल सेक्रेटरी), खरचन जीत सिंह, जसपाल सिंह, रणजीत सिंह, दिलबाग सिंह, सुरिंदर सिंह, कुलवंत सिंह, जसवंत सिंह, सुनील भनोट और भूपिंदर सिंह सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

सभी सदस्यों ने दूध के लंगर को सफल बनाने हेतु पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया तथा भविष्य में भी इस प्रकार की सेवाएं जारी रखने का संकल्प दोहराया।

रांची में दहशतगर्दों को शराब नहीं मिला तो चार राउंड दाग दी गोली

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, एक तरफ पुलिस की फ्लैग-मार्च तो दूसरी तरफ फाइलिंग .रांची पुलिस के फ्लैग मार्च के कुछ ही घंटे बाद अपराधियों ने एक शराब दुकान में तबाड़तोड़ फायरिंग कर सनसनी फैला दी ,होली है है तो हुड़दंग होगी ही . होली पर चाक-चौबंद सुरक्षा का दावा कर रही रांची पुलिस को असमंजस में डाल दिया .

तीन हथियारबंद अपराधियों ने एक शराब दुकान पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर पूरे इलाके में दहशत फैला दी. चार राउंड गोली चलाने वाले अपराधी शराब की मांग कर रहा था और मना करने पर गाली-गलौज के साथ फायरिंग पर उतर आए. गनीमत थी की कोई हादसा नहीं हुआ. लेकिन घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई, जो अपराधियों के बेखौफ रूप को साफ बयां कर रही है.

मंगलवार देर रात रांची के अनगड़ा थाना क्षेत्र स्थित एक शराब दुकान पर तीन अपराधी पहुंचे. सीसीटीवी फुटेज के मुताबिक, अपराधी आते ही शराब की डिमांड करने लगे. दुकानदार ने मना किया तो अपराधी भड़क गए. पहले धमकी दी, फिर गाली-गलौज की और अंत में चार राउंड फायरिंग कर दी. इनमें से तीन गोली दुकान के अंदर चलाई गई, जबकि एक बाहर चलाई. फायरिंग के दौरान अपराधियों ने शराब की बोतलों को भी निशाना बनाया. दहशत के मारे दुकान का एक कर्मचारी मजबूरन उन्हें एक शराब की बोतल भी दी. फायरिंग के बाद तीनों अपराधी बाइक पर फरार हो गए.तीन की संख्या में अपराधी आए थे. सभी के पास हथियार था. सवाल है कि एक तरफ होली को लेकर हर तरफ पुलिस की चेकिंग चल रही है. वहीं दूसरी तरफ हथियार से लैस तीन अपराधी खुलेआम घूम रहे हैं. सीसीटीवी में अपराधियों के चेहरे साफ दिख रहा है, साथ ही उनकी आवाज भी रिकॉर्ड हो गई है. जिसमें वे शराब मांगते और धमकाते सुनाई दे रहे हैं.घटना की सूचना मिलते ही अनगड़ा थाने की पुलिस टीम मौके पर पहुंची. पुलिस के अनुसार सीसीटीवी फुटेज की पड़ताल कर अपराधियों की शिनाख्त कर ली गई है. अनगड़ा थाना प्रभारी गौतम ने बताया की दहशत फैलाने के इरादे से फायरिंग की गई है. फुटेज के आधार पर अपराधियों की पहचान हो चुकी है.

187वीं संस्थापक दिवस पर जमशेदपुर में याद किये गये जमशेदजी टाटा

यहां टाटा स्टील और टाटा मोटर्स 11हजार करोड रूपए करेगी निवेश, कर्मचारियों की संख्या बढ़कर 15 लाख होगी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, 3 मार्च जमशेदपुर के औद्योगिक इतिहास में एक खास दिन जब लौह शहर टाटा शहर सज धज कर तैयार होता है नई नवेली हसीना की तरह .यही वह दिन है जिस दिन एक महापुरुष ने 187 वर्ष पहले जन्म लिया और अपना कर्मभूमि इसी क्षेत्र को चुना .आज टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा के जन्मदिवस पर उनको भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी यहां जमशेदपुर में दी गई. टाटा स्टील के जमशेदपुर स्थित प्लांट के मुख्य गेट पर आयोजित इस कार्यक्रम में टाटा समूह के चेयरमैन एन चंद्रशेखर, टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन नोएल टाटा समेत अन्य पदाधिकारियों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की. इस दौरान सभी ने बारी-बारी से जेएन टाटा की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और पुष्प अर्पित किए. इस दौरान टाटा स्टील और टाटा समूह से जुड़ी कंपनियों के वरीय पदाधिकारी मौजूद थे. टाटा समूह की ओर से संस्थापक दिवस को साल की नयी शुरुआत करती है. इस बार का थीम है 'वन टाटा वन विजन'.

टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा का जन्मदिन काफी भव्य रूप में मनाया गया. टाटा स्टील और टाटा समूह की अन्य कंपनियों के विभिन्न विभागों का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 42 झांकी संस्थापक को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आयोजित औपचारिक परेड में शामिल हुए. नागरिक सलाहकार परिषद के सदस्य, टाटा स्टील और समूह की कंपनियों के श्रमिक संघ प्रतिनिधि और वरिष्ठ अधिकारी श्रद्धांजलि समारोह में शामिल हुए.

कार्यक्रम के दौरान, चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने मीडियाकर्मियों से बातचीत की और टाटा स्टील की विकास यात्रा, रणनीतिक प्राथमिकताओं और भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला, साथ ही सतत विकास और राष्ट्र निर्माण के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता को दोहराया. संस्थापक दिवस टाटा स्टील के लिए सामूहिक गौरव का क्षण बना हुआ है, जो जमशेदजी नसरवानजी टाटा की अमिट विरासत और दूरदर्शी नेतृत्व का सम्मान करता है, जिनके आदर्श संगठन के भविष्य के मार्ग का मार्गदर्शन करते हैं.

टाटा समूह के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने कहा है कि टाटा समूह में एआई के जरिये टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज में नौकरी बढ़ेगी. अभी टाटा समूह में कर्मचारियों की संख्या 9 लाख से बढ़कर 11 लाख हो गयी है, जिसकी संख्या 15 लाख तक पहुंच जायेगा. उन्होंने कहा कि विश्व में युद्ध के हालत उत्पन्न हुए है. मुश्किल हालात हैं. अभी तो ज्यादा दिक्कत नहीं है पर अगर यह खींचेगा तो पूरी दुनिया के साथ टाटा समूह पर भी असर पड़ेगा. लेकिन अभी स्थिति नियंत्रण में हैं. उन्होंने बताया कि टाटा स्टील और टाटा मोटर्स जमशेदपुर में करीब 11 हजार करोड़ रुपये का निवेश करेंगी. इसको लेकर सरकार के साथ बातचीत चल रही।

भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर : जननायक की जीवंत विरासत

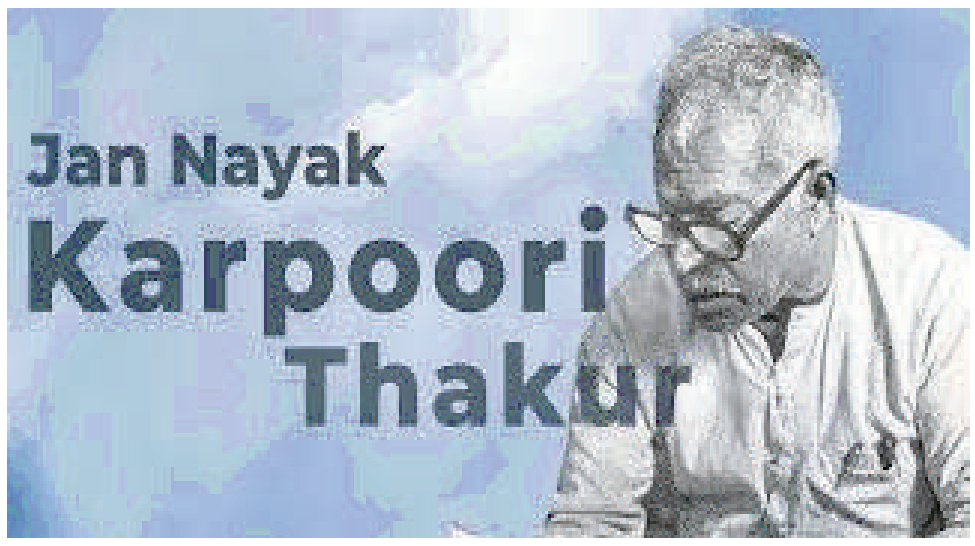

--शम्भू शरण सत्यार्थी

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि वह साधारण घरों से असाधारण नेतृत्व पैदा करता है। इसी परंपरा के उज्ज्वल उदाहरण थे कर्पूरी ठाकुर—एक ऐसे जननेता, जिनकी राजनीति सत्ता के वैभव से नहीं, समाज के वंचितों के विश्वास से संचालित होती थी। वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय की विचारधारा के प्रखर संवाहक थे। सादगी, स्पष्टवादिता और सिद्धांतनिष्ठा उनके व्यक्तित्व की पहचान थी। जनता उन्हें "जननायक" कहकर पुकारती थी—और यह संबोधन किसी प्रचार का परिणाम नहीं, बल्कि जीवन भर के संघर्ष का सम्मान था।

कर्पूरी ठाकुर का जन्म 24 जनवरी 1924 को बिहार के एक साधारण परिवार में हुआ। प्रारंभिक जीवन आर्थिक कठिनाइयों में बीता, किंतु संघर्षों ने उनके भीतर संवेदना और साहस दोनों को गढ़ा। वे छात्र जीवन से ही स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। यह वही दौर था जिसने उनके भीतर अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस स्थायी रूप से स्थापित कर दिया।

स्वतंत्रता के बाद उन्होंने राजनीति को करियर नहीं, मिशन के रूप में अपनाया। समाजवादी विचारधारा से प्रेरित होकर वे उन वर्गों की आवाज़ बने, जिनकी भागीदारी लोकतंत्र में नगण्य थी। उनकी राजनीति का मूल लक्ष्य था—सत्ता का विकेंद्रीकरण और सामाजिक अवसरों का न्यायपूर्ण वितरण। वे मानते थे कि लोकतंत्र तभी सार्थक होगा, जब समाज के अंतिम व्यक्ति तक अवसर पहुँचेगा।

बिहार की राजनीति में उनका कद लगातार बढ़ता गया। वे कई बार विधायक बने और दो बार बिहार के मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुए। किंतु मुख्यमंत्री बनने के बाद भी उनके जीवन में कोई बाहरी परिवर्तन नहीं आया। सादा पहनावा, सरल रहन-सहन और जनता से सीधा संवाद—यह उनकी कार्यशैली का हिस्सा था। वे सरकारी संसाधनों के दुरुपयोग के कट्टर विरोधी थे। उनके बारे में कहा जाता है कि वे निजी जीवन में भी उतने ही अनुशासित थे, जितने सार्वजनिक जीवन में।

कर्पूरी ठाकुर का सबसे ऐतिहासिक निर्णय था पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण लागू करना। 1978 में उनके नेतृत्व में बिहार में जो आरक्षण नीति लागू हुई, उसने सामाजिक न्याय की दिशा में नई बहस को जन्म दिया। यह निर्णय केवल प्रशासनिक आदेश नहीं था, बल्कि सदियों से वंचित समाज को प्रतिनिधित्व देने की ऐतिहासिक पहल थी। इस नीति ने आगे चलकर राष्ट्रीय स्तर पर मंडल आयोग की सिफारिशों के लिए वैचारिक आधार तैयार किया। विरोध भी हुआ, राजनीतिक जोखिम भी थे, पर वे अपने निर्णय पर अडिग रहे। उनके लिए राजनीति जनहित से ऊपर नहीं थी।

शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका योगदान उल्लेखनीय रहा। वे शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम मानते थे। उन्होंने माध्यमिक शिक्षा में अंग्रेज़ी की अनिवार्यता समाप्त कर दी, ताकि ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को अवसर मिल सके। इस निर्णय पर भी बहस हुई, आलोचना हुई, पर उनका तर्क स्पष्ट था—शिक्षा अवसर का द्वार है, बाधा का नहीं।

उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि सिद्धांतों पर टिके रहकर भी राजनीति की जा सकती है। उन्होंने कभी व्यक्तिगत संपत्ति अर्जित नहीं की। उनके निधन के समय भी उनके पास वैभव का कोई प्रतीक नहीं था। यही कारण है कि जनता उन्हें आज भी ईमानदारी और नैतिकता के प्रतीक के रूप में याद करती है।

समय बीतने के साथ उनकी विचारधारा और भी प्रासंगिक होती गई। सामाजिक न्याय, समावेशी विकास और समान अवसर की अवधारणा आज भी भारतीय लोकतंत्र की केंद्रीय चर्चा है। कर्पूरी ठाकुर ने जिस साहस के साथ इन मुद्दों को उठाया, उसने आने वाली पीढ़ियों के लिए रास्ता प्रशस्त किया। वे जातीय असमानता, आर्थिक विषमता और शिक्षा में भेदभाव के खिलाफ निरंतर संघर्षरत रहे।

उनकी राजनीतिक शैली में संवाद और सहमति का विशेष स्थान था। वे विरोधियों से भी व्यक्तिगत कटुता नहीं रखते थे। उनकी वाणी में तीखापन हो सकता था, पर मन में द्वेष नहीं। वे सत्ता को सेवा का माध्यम मानते थे, विशेषाधिकार का नहीं। यही कारण है कि विभिन्न दलों और विचारधाराओं के लोग भी उनके प्रति सम्मान रखते थे।

आज जब राजनीति में वैचारिक प्रतिबद्धता की चर्चा होती है, तो कर्पूरी ठाकुर का नाम आदर से लिया जाता है। उन्होंने यह साबित किया कि गरीब परिवार से आया व्यक्ति भी यदि ईमानदारी और समर्पण से कार्य करे, तो समाज की दिशा बदल सकता है। वे केवल बिहार के नेता नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र के नैतिक स्तंभों में से एक थे।

उनकी जयंती पर हर वर्ष 24 जनवरी को उन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है। विद्यालयों, संस्थानों और राजनीतिक मंचों पर उनके योगदान को स्मरण किया जाता है। किंतु सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी, जब सामाजिक न्याय की उनकी भावना को व्यवहार में उतारा जाए—जब अवसरों की समानता सुनिश्चित हो, जब शिक्षा सबके लिए सुलभ हो और जब राजनीति सेवा का पर्याय बने।

कर्पूरी ठाकुर का जीवन हमें यह सिखाता है कि जननेता वही है, जो जनता के बीच से उठे, जनता के लिए लड़े और अंततः जनता के विश्वास में अमर हो जाए। वे इतिहास के पन्नों में दर्ज नाम भर नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा में बसने वाला विचार हैं। उनकी सादगी, साहस और सामाजिक न्याय के प्रति अटूट प्रतिबद्धता आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

डॉ. जसबीर सिंह संधू द्वारा वार्ड नंबर 2 में विकास कार्यों का उद्घाटन

संत एवेन्यू और संधू कॉलोनी में नई गलियों के निर्माण से क्षेत्रवासियों में खुशी की लहर

अमृतसर, 4 मार्च (साहिल बेरी)

अमृतसर पश्चिम से विधायक डॉक्टर जसबीर सिंह संधू ने आज वार्ड नंबर 2 में संत एवेन्यू और संधू कॉलोनी में नवनिर्मित गलियों का उद्घाटन किया। यह उद्घाटन समारोह वार्ड नंबर 2 के पार्षद अमरजीत सिंह (एलआईसी वाले) की अगुवाई में आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में क्षेत्रवासियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर संबोधित करते हुए डॉ. संधू ने कहा कि पंजाब सरकार शहर के प्रत्येक वार्ड में बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि इन नई गलियों के निर्माण से न केवल क्षेत्र की सूरत निखरेगी, बल्कि बरसात के दिनों में आने वाली समस्याओं से भी लोगों को राहत मिलेगी। उन्होंने यह भी बताया कि आने वाले समय में अन्य विकास कार्य भी प्राथमिकता के आधार पर शुरू किए जाएंगे।

पार्षद अमरजीत सिंह ने डॉ. संधू का धन्यवाद करते हुए कहा कि उनके सहयोग से वार्ड में कई विकास परियोजनाएं लागू की जा रही हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया कि क्षेत्र की प्रत्येक समस्या को प्राथमिकता के आधार पर हल किया जाएगा।

इस मौके पर पार्षद प्रभ उप्पल, संत एवेन्यू के प्रधान गुरशरण सिंह, संधू कॉलोनी के प्रधान जसबीर सिंह, विक्की, दलवीर सिंह कुक्कू, गगनदीप सिंह, चांद, भट्टी, अमनदीप सिंह, दविंदर सिंह, करणजोत सिंह, अमनदीप सिंह, खैरा सिंह, राजिंदर कुमार, बीरा सिंह, गुरमीत सिंह, हरसिमरन सिंह, शमशेर सिंह, सुखमनप्रीत सिंह, दीपु पहलवान, सुखवंत सिंह, नीरज कुमार सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति और क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

क्षेत्रवासियों ने नई बनी गलियों पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि इस कार्य से उनकी लंबे समय से चली आ रही समस्या का समाधान हुआ है। उन्होंने विधायक और पार्षद का आभार व्यक्त किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023